आज की खबर आज ही

जनाकांक्षाओं का सजग प्रहरी

चेतना मंच

वर्ष : 26 | अंक : 244 | website:www.chetnamanch.com | नोएडा, सोमवार, 26 अगस्त, 2024 | Chetna Manch | Chetna Manch | मूल्य 2.00 रुपया | पेज: 8

मुख्यमंत्री ने किया दुर्गादास राठौर की प्रतिमा का अनावरण

समाज, जाति, भाषा के नाम पर बांटने वाली ताकतों से सावधान रहना होगा : योगी

आगरा (एजेंसी)। आगरा में जन्माष्टमी के अवसर पर सीएम योगी ने आज दुर्गादास राठौर की प्रतिमा का अनावरण किया। वे तय समय पर ताजगंज के पुरानी मंडी चौराहे पर पहुंचे। राष्ट्रवीर दुर्गादास राठौर की प्रतिमा का अनावरण करने के बाद उन्होंने कहा कि आगरा के कण कण में कन्हैया का वास है। यहां कला है, आस्था है, समर्पण है, विश्वास है। ये ही राष्ट्र निष्ठा बढ़ाती है।

सीएम योगी ने कहा कि समाज, जाति, भाषा के नाम पर बांटने वाली ताकतों से सावधान रहना होगा। दुर्गादास राठौर का यही संकल्प था। सबसे बड़ी सत्ता के सामने जमींदारों के लिए घुटने टेक दिए थे। उनका कोई नाम लेने वाला नहीं है। दुर्गादास का नाम मारवाड़, एमपी में अमर हैं। हमें महापुरुषों का नाम याद रखना होगा। विधायक डॉ. धर्मेश आये थे, 13 को आना था, पर अब आ पाया। 10 साल से मूर्ति मेरा इंतजार कर रही थी।

जिस दिन कृष्ण आए, उस दिन लोकार्पण हुआ है। सीएम योगी ने कहा कि बांग्लादेश से सबक सीखिए, एक रहना है। बंटना नहीं है। बटेंगे तो कटेंगे और एक रहेंगे तो सुरक्षित रहेंगे।

15 फीट ऊंची अष्टधातु की प्रतिमा

पुरानी मंडी चौराहा पर सीएम योगी स्थापति घोड़े पर सवार दुर्गादास राठौड की 15 फीट ऊंची प्रतिमा का अनावरण किया। ये राठौर साहू विकास समिति की ओर से लगवाई गई है. जो ग्वालियर के कारीगरों ने तैयार की। प्रतिमा को करीब 10 वर्ष पहले स्थापित हुई थी। कुछ कार्य अधूरे थे। जो अब पूर्ण हुए हैं। राष्ट्रवीर दुर्गादास राठौर की प्रतिमा का अनावरण और जनसभा संबोधित करने के बाद राजकीय वायुयान से लखनऊ के लिए रवाना हुए।

डॉ महेश शर्मा ने योग शिविर का किया शुभारंभ

नोएडा (चेतना मंच)। सेक्टर-50 के सामुदायिक केंद्र में आज एक विशेष योग और नाभि चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर का आयोजन आरडब्ल्यूए सेक्टर-50 एफ ब्लॉक के सहयोग से किया गया, जिसमें प्रसिद्ध नाभि चिकित्सक निर्भय ने उपस्थित लोगों को योग और नाभि चिकित्सा के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी दी।

इस अवसर पर सांसद डॉ महेश शर्मा मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे, जबकि फ़ोनरवा अध्यक्ष योगेन्द्र शर्मा विशिष्ट अतिथि के रूप में कार्यक्रम में शामिल हुए। शिविर में लगभग 200 लोगों ने भाग लिया और योगाभ्यास किया, साथ ही नाभि चिकित्सा के लाभों के बारे में जागरूकता प्राप्त की।

आरडब्ल्यूए के महासचिव राजेश सिंह ने जानकारी दी कि इस कार्यक्रम में फ़ोनरवा के कोषाध्यक्ष पवन यादव, नोफ़ा अध्यक्ष राजीवा सिंह, अग्रवाल मित्र मण्डल के अध्यक्ष मुकेश गुप्ता, डॉ डी शर्मा, डॉ एके अग्रवाल, डॉ नीरज जैन और अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने भी शिरकत की। शिविर का उद्देश्य लोगों को स्वस्थ जीवन शैली अपनाने और नाभि चिकित्सा जैसी प्राचीन विधाओं के प्रति जागरूक करना था। कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए सभी प्रतिभागियों और आयोजकों ने अपना आभार व्यक्त किया।

नोएडा पोस्टमॉर्टम हाउस कांड में महिला भी गिरफ्तार

नोएडा (चेतना मंच)। नोएडा पुलिस ने सेक्टर-126 पोस्टमॉर्टम हाउस के वायरल वीडियो में आपत्तिजनक हालत में दिखाई देने वाली महिला को भी गिरफ्तार कर लिया है। महिला बरौला गांव की रहने वाली है और उसके पति की मौत हो चुकी है। इस मामले में अब तक चार आरोपियों की गिरफ्तारी हो चुकी है। पुलिस और स्वास्थ्य विभाग की टीमें इस मामले की जांच कर रही हैं।

सोशल मीडिया के विविध प्लैटफॉर्म पर बीते बुधवार एक वीडियो वायरल हुआ था, जिसमें एक महिला और पुरुष कर्मचारी आपत्तिजनक हालात में दिख रहे थे। इस मामले में डिप्टी सीएमओ आरपी सिंह की शिकायत पर कोतवाली सेक्टर-126 पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर जांच शुरू की। जांच के दौरान पता चला कि वीडियो में दिखाई देने वाला व्यक्ति सफाईकर्मी शेर सिंह है। शेर सिंह महिला को **(शेष पृष्ठ-4 पर)**

नवादा गांव में पीजी हाउस में लगी भीषण आग

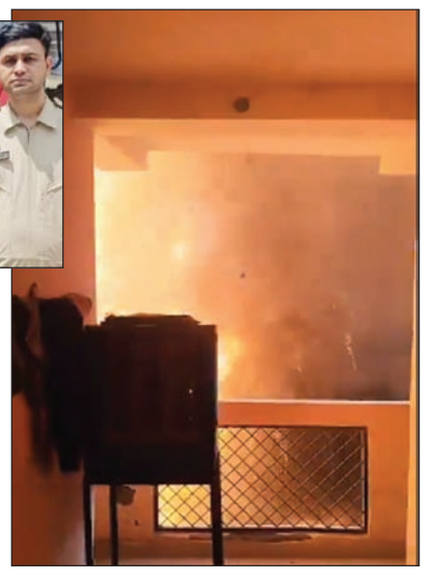

नोएडा (चेतना मंच)। थाना सेक्टर 58 क्षेत्र के नवादा गांव में स्थित रेनबो रेजिडेंसी गर्ल्स पीजी, सोनू पीजी के बाहर लगे एडवरटाइजिंग होर्डिंग में आज सुबह को शार्ट सर्किट के चलते आग लग गई। घटना की सूचना पाकर मौके पर पहुंची 5 दमकल विभाग की गाड़ियों ने आग पर काबू पाया।

मुख्य दमकल अधिकारी प्रदीप कुमार चैबे ने बताया कि नवादा गांव में स्थित रेनबो रेजिडेंसी गर्ल्स पीजी, सोनू पीजी के बाहर लगे एडवरटाइजिंग होर्डिंग में लगे बिजली की मीटर में आज सुबह को शार्ट सर्किट के चलते आग लग गई। आग के चलते तेजी से धुआं फैला तथा वहां रहने लोगों में हड़कंप मच गया। लोगबाग पीजी से बाहर भागे। उन्होंने बताया कि मौके पर पहुंची फायर ब्रिगेड की गाड़ियों ने आग पर काबू पाया। उन्होंने बताया कि इस घटना में कोई जनहानि नहीं हुई है।

घटनास्थल पर पहुंचे अग्निशमन विभाग के अधिकारियों ने तत्काल आसपास के क्षेत्र को खाली कराने का आदेश दिया। यह कदम आम नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए उठाया गया। घटना के बाद हड़कंप मच गयी। जिसके बाद स्थानीय पुलिस ने भी मौके पर पहुंचकर स्थिति **(शेष पृष्ठ-4 पर)**

नोएडा में डायवर्जन लागू

इस्कॉन मंदिर में जुटेंगे पांच लाख भक्त!

नोएडा (चेतना मंच)। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर आज सेक्टर-33 इस्कॉन मंदिर, सेक्टर-19 सनातन धर्म मंदिर, सेक्टर-2 लाल मंदिर में आयोजित कार्यक्रम में काफी संख्या में श्रद्धालु पहुंचेंगे। विभाग की ओर से इस्कॉन मंदिर के पास ट्रैफिक डायवर्जन लागू रहेगा।

वहीं सेक्टर-19 सनातन धर्म मंदिर और सेक्टर-2 लाल मंदिर से संदीप पेपर मिल चौक व गोलचक्कर चौक के मध्य वाहनों का आवागमन स्थिति के अनुसार प्रतिबंधित किया जाएगा। डीसीपी ट्रैफिक यमुना प्रसाद का कहना है कि चालक वैकल्पिक मार्ग का प्रयोग करें। यातायात संबंधित जानकारी के लिए यातायात हेल्पलाइन नंबर-9971009001 पर संपर्क कर सकते हैं। **(शेष पृष्ठ-4 पर)**

रात 12 बजे तक होंगे दर्शन

भक्तों के लिए रात्रि 12 बजे तक दर्शन होंगे। पूरे दिन भजन-कीर्तन होगा। साथ ही प्रसाद वितरित किया जाएगा। मंदिर में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर शहर के साथ विदेशों से भी श्रीकृष्णा के भक्त शामिल होंगे। मंदिर एकांत धाम ने बताया कि अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी, मलेशिया समेत अन्य देशों से भक्त भारत पहुंच रहे हैं।

वाहनों की आवाजाही पूरी तरह रहेगी बंद

जन्माष्टमी के दिन वाहनों की आवाजाही पूरी तरह बंद रहेगी। भगवान का पंञ्च गव्य से अभिषेक किया जाएगा। भगवान को 108 प्रकार के देशी तथा विदेशी विभिन्न व्यंजन का भोग लगाया जाएगा। इसमें कई प्रकार के खीर, हलवे, सब्जियों, स्नैक्स व केक सम्मिलित होंगे।

सोसायटी में 18 घंटे रही पानी की आपूर्ति बाधित

ग्रेटर नोएडा। सूरजपुर साइट सी स्थित मिग्सन ग्रीन मैंशन सोसायटी में करीब 18 घंटे से पानी न आने पर सोसायटी निवासियों में रोष हैं। शनिवार से रविवार तक जलापूर्ति बाधित हुई। निवासियों का आरोप है कि सोसायटी की मोटर खराब हो गई थी, जिसका लोगों द्वारा विरोध जताया गया।

पुलिस ने सोसायटी पहुंचकर मामले को शांत कराया। रविवार को ठीक कर पानी की आपूर्ति शुरू की गई। रविवार को अवकाश होने पर अधिकतर लोग सोसायटी में थे, ऐसे में लोगों की काफी परेशानी हुई। लोगों को बाजार से पानी खरीदना पड़ा। इस पर निवासियों ने प्रबंधन से टैंकर मंगाने की मांग की, लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई। काफी देर तक पानी न आने पर निवासियों ने मेंटेनेंस कार्यालय पर जाकर विरोध जताया। साथ ही पुलिस को सूचित कर सोसायटी में बुलाया। पुलिस के आने पर प्रबंधन द्वारा पानी का एक टैंकर मंगाकर भूमिगत वाटर टैंक को भरा गया, जिससे सिर्फ सुबह तक का काम चला। रविवार सुबह भी सिर्फ एक टैंकर मंगाया गया, जिससे लोगों की पूर्ति नहीं पड़ी।

सुबह करीब 10 बजे फिर से घरों में पानी आना बंद हो गया, जिसके बाद लोगों को बाजार से पानी खरीद कर लाना पड़ा। एओए अध्यक्ष ने बताया कि मोटर को ठीक कराया गया, जिसके बाद लोगों के घरों में पानी आपूर्ति हुई।

एओए अध्यक्ष सीबीएस यादव ने बताया कि शनिवार रात करीब आठ बजे सोसायटी में पानी की आपूर्ति बंद हो गई थी। काफी देर पानी नहीं आने पर निवासियों ने सोसायटी के वाट्सएप ग्रुप पर शिकायत करना शुरू कर दिया। मेंटेनेंस प्रबंधन ने बताया कि पंप हाउस की मोटर खराब हो गई है। इसके कारण घरों में पानी नहीं पहुंच रहा है।

राष्ट्रीय लोक दल के महानगर महामंत्री बने सुनील पांडे

नोएडा (चेतना मंच)। सेक्टर-37 अरुण विहार निवासी सुनील पांडे को राष्ट्रीय लोक दल में नोएडा महानगर के महामंत्री की जिम्मेदारी सौंप गई है। यह जानकारी राष्ट्रीय लोकदल की नोएडा महानगर के अध्यक्ष विजेंद्र यादव ने दी है। विजेंद्र यादव ने बताया कि राष्ट्रीय लोक दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष जयंत चौधरी के निर्देश पर सुनील पांडे को पार्टी में यह अहम जिम्मेदारी सौंपी गई है। उन्होंने आशा व्यक्त की है कि सुनील पांडे नोएडा महानगर में राष्ट्रीय लोकदल कि संगठन का व्यापक **(शेष पृष्ठ-4 पर)**

सुपरटेक के फंड में 9 हजार करोड़ की गड़बड़ी, ईओडब्ल्यू से जांच की मांग

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। सुपरटेक की अलग-अलग परियोजनाओं में कुल नौ हजार करोड़ रुपये के फंड में गड़बड़ी की आशंका जताते हुए खरीदारों ने ईओडब्ल्यू (आर्थिक अपराध शाखा) से जांच की मांग की है। सुपरटेक की कई परियोजनाओं के खरीदार ईओडब्ल्यू के विशेष आयुक्त से मिले और वित्तीय घोटाले की संभावनाओं के बारे में बताया।

सभी खरीदार अपने फ्लैट की करीब 95 प्रतिशत रकम सुपरटेक को दे चुके हैं। वर्ष 2010 में शुरू हुई सुपरटेक की कई परियोजनाएं अभी तक अधूरी हैं। सुपरटेक लिमिटेड के नौ प्रोजेक्ट जिसमें नोएडा के नार्थ आई, ईकोसिटी, रोमानो और केपटाउन, ग्रेटर नोएडा के इकोविलेज 1, 2, 3, स्पोर्ट्स विलेज, यमुना एक्सप्रेसवे के अपकंट्री और गुरुग्राम के हिलटाउन के हजारों खरीदारों के प्रतिनिधि आर्थिक अपराध शाखा के विशेष आयुक्त शरद **(शेष पृष्ठ-4 पर)**

RADIANT ACADEMY
(AFFILIATED TO CBSE)
B-180, sector-55, noida Ph: 120-4314312/ 6514636
Mob. : 9350251631/ 9674710772 E-mail: radiantacademynoida@yahoo.com
RADIANT ACADEMY
(J.H.S.) (AFFILIATED TO CBSE)
Sorkha, Sector- 115, noida on Fng Ph: 120- 6495106,
Mob. : 9873314814/ 9674710772 E-mail: radiantacademysorkha@yahoo.com
Let your child Explore the world with us in a Secure Environment!
We are a Co-Educational Medium Senior Secondary School
imparting quality education since the last 20 years.
FROM ADMISSION OPEN NURSERY TO CLASS XI Transport Facility Available
FACILITIES AVAILABLE AT SCHOOL : ●Highly Qualified And Trained Faculty well Quipped Labs ●CCTV Controlled Environment ●Activity Based Learning ● Well Equipped Library ●GPS Enable Buses

अदालत के भरोसे लोकतंत्र

भारत का लोकतंत्र सर्वोच्च अदालत के भरोसे है। वह ही आम आदमी को, अंततः, इंसाफ देती है। यदि सर्वोच्च अदालत न होती, तो देश का आम आदमी कराहते, चिल्लाते, इधर-उधर धक्के खाते हुए जीवन के अंत तक पहुंच सकता था! भारत में भी 'जंगल-राज' का माहौल होता! आज सर्वोच्च अदालत है, तो आम आदमी की उस तक पहुंच बेहद पेचीदा और महंगी है। ऐसे मुट्ठी भर मामले होंगे, जिनका शीर्ष अदालत स्वतः संज्ञान लेती है और फिर पीड़ित पक्ष की लड़ाई लड़ते हुए उसे न्याय देने की कोशिश करती है। लोकतंत्र की जिम्मेदारी और जवाबदेही न्यायपालिका की ही नहीं है। उसके लिए विधायिका की बुनियादी जिम्मेदारी है, लेकिन विधायक हो अथवा सांसद हो, उन्हें इस जिम्मेदारी का एहसास तक नहीं है। बस, उन्हें ईवीएम का बटन दबाने के लिए ही जनता की दरकार है, लिहाजा वे पांच साल के कार्यकाल के बाद, कुछ दिनों के लिए, जनता की मनुहार और गुहार करते हैं। उसके बाद जनता की मदद का संदर्भ आता है, तो वे गायब हो जाते हैं। जनता के एक-एक वोट से ही विधायक और सांसद चुने जाते हैं। हमें लगता है कि बस, जनता का दायित्व वोट तक सिमट कर रह गया है। अब औसत मतदाता, अर्थात देश का नागरिक, 'ह्यूमन वोटिंग मशीन' बनकर रह गया है। अदालतों को जनता के वोट नहीं चाहिए, लेकिन न्यायाधीशों के भीतर आम आदमी, न्याय और सामाजिक-विधिक व्यवस्था अब भी जिंदा हैं। वे देश को 'केला गणतंत्र' बनने से बचाना चाहते हैं। वे लोकतंत्र के प्रहरी हैं। वे अपराधियों, बलात्कारियों, व्यभिचारियों, हत्यारों और माफिया आदि को कानून के अंतिम निष्कर्ष तक पहुंचाने और दंडित करने के पक्षधर हैं। कोलकाता अस्पताल रेप-मर्डर कांड को ही लें। सर्वोच्च अदालत देश भर के डॉक्टरों की लड़ाई लड़ रही है, लिहाजा उसकी आग्रहपूर्ण अपील पर डॉक्टरों और उनके संगठनों ने हड़ताल खत्म कर दी है। अदालत का यह आग्रह मानवीय सरोकार वाला था, क्योंकि असंख्य मरीज इलाज के अभाव में तड़प रहे थे। कुछ भी अनहोनी हो सकती थी। शायद कोई त्रासदी हुई भी हो! डॉक्टरों को भी, अंततः, मानवीय दायित्व का एहसास हुआ। इस केस का सर्वोच्च अदालत ने स्वतः संज्ञान लिया है। न्यायिक पीठ कोलकाता के आरजी कर मेडिकल कॉलेज एंड अस्पताल की युवा ट्रेनी डॉक्टर के साथ बर्बर बलात्कार और निर्मम हत्या की सुनवाई तो कर रही है। बंगाल की सरकार और पुलिस की नालायकी, लापरवाही, अराजकता, सांठगांठ के मद्देनजर उन्हें जवाबदेही पर टांग भी दिया है। इसके साथ-साथ अस्पतालों की चाक-चौबंद सुरक्षा के लिए केंद्रीय स्वास्थ्य सचिव को आदेश दिए हैं। वह राज्यों के मुख्य सचिवों और पुलिस महानिदेशकों से संवाद कर अकाट्य सुरक्षा-तंत्र लागू करेंगे। कोलकाता के दागदार अस्पताल में सीआईएसएफ के जवान तैनात हो चुके हैं। देश के प्रधान न्यायाधीश जस्टिस चंद्रचूड़ ने डॉक्टरों की 36 और 48 घंटे की निरंतर ड्यूटी को 'अमानवीय' करार दिया है। जाहिर है कि शीर्ष अदालत के हस्तक्षेप से यह व्यवस्था भी बदलेगी। यदि एक शिक्षित और पेशेवर व्यक्ति की नियति यही है, तो वह शिक्षा और हुनर बेमानी हैं। सर्वोच्च अदालत ने करीब 24 लाख छात्रों की नीट परीक्षा के संदर्भ में भी कमाल का फैसला दिया। शाहबानो से तीन तलाक और मौजूदा यौन दरिंदगी के मामलों तक सर्वोच्च अदालत ने ही आम आदमी और समाज को बचाया है। जन-प्रतिनिधियों की संसद ने या तो शीर्ष अदालत और संविधान पीठ के फैसले पलटे हैं अथवा सदनों में शोर मचाया है। क्या जन-प्रतिनिधि आम आदमी को इसी तरह बचाएंगे और अपने मतदाता की रक्षा करेंगे। कोलकाता रेप-मर्डर केस में राजनीति दोफाड़ हुई है और उंगलियां तोड़ देने तक की हुंकार भरी गई है। सर्वोच्च अदालत ने चुनावी बॉन्ड सरीखे मुद्दों पर फैसला दिया है और पूरी विधायिका, कार्यपालिका को बेनकाब किया है। राजनीतिक भ्रष्टाचार और अनुच्छेद 356 के दुरुपयोग सरीखे मामलों में भी शीर्ष अदालत ने 'न्याय' किया है। कुछ अपवाद सर्वोच्च अदालत में भी हो सकते हैं, कुछ फैसले भी सवालिया हो सकते हैं, लेकिन समग्रता में हमारा देश सर्वोच्च अदालत के ही भरोसे है।

रामचरित मानस

कल के अंक में आपने पढ़ा था कि इसी कारण बेचारे कौवे और बगुले रूपी विषयी लोग यहाँ आते हुए हृदय में हार मान जाते हैं, क्योंकि इस सरोवर तक आने में कठिनाइयाँ बहुत हैं। श्री रामजी की कृपा बिना यहाँ नहीं आया जाता॥ उससे आगे का वर्णन क्रमानुसार प्रस्तुत है।

कठिन कुसंग कुपंथ कराला। तिन्ह के बचन बाघ हरि ब्याला॥
गृह कारज नाना जंजाला। ते अति दुर्गम सैल बिसाला॥

घोर कुसंग ही भयानक बुरा रास्ता है, उन कुसंगियों के वचन ही बाघ, सिंह और साँप हैं। घर के कामकाज और गृहस्थी के भाँति-भाँति के जंजाल ही अत्यंत दुर्गम बड़े-बड़े पहाड़ हैं॥

बन बहु बिषम मोह मद माना। नदीं कुतर्क भयंकर नाना॥

मोह, मद और मान ही बहुत से बीहड़ वन हैं और नाना प्रकार के कुतर्क ही भयानक नदियाँ हैं॥

दो0-जे श्रद्धा संबल रहित नहिं संतन्ह कर साथ।
तिन्ह कहुँ मानस अगम अति जिन्हहि न प्रिय रघुनाथ॥

जिनके पास श्रद्धा रूपी राह खर्च नहीं है और संतों का साथ नहीं है और जिनको श्री रघुनाथजी प्रिय हैं, उनके लिए यह मानस अत्यंत ही अगम है। (अर्थात श्रद्धा, सत्संग और भगवत्प्रेम के बिना कोई इसको नहीं पा सकता)॥

(क्रमशः...)

विकसित भारत के संकल्प को पूरा होने से रोकने के लिए रची गयी है एक बड़ी साजिश

भारत जब विकसित देश बनने के संकल्प को लेकर आगे बढ़ रहा है तो उसकी राह में बाधाएं पैदा करने के लिए तमाम तरह की साजिशें की जा रही हैं। इनमें से एक साजिश है देश के युवाओं को नशे और अश्लीलता के दुष्चक्र में फंसाने की और यह साजिश काफी हद तक सफल होती भी दिख रही है। कॉलेजों के आसपास आसानी से मादक पदार्थ मिल जाते हैं, रेव पार्टियों का चलन देश में बढ़ चुका है, मोबाइल पर अश्लील कंटेंट आसानी से उपलब्ध है। इस सबसे युवाओं के दिलो-दिमाग पर बड़ा असर पड़ रहा है और वह अपनी असल जिम्मेदारियों से विमुख होकर भ्रमित हो रहे हैं। विकसित भारत के लिए आज जो आधार तैयार किया जा रहा है उस पर इमारत युवाओं को ही आगे चलकर खड़ी करनी है इसलिए सरकार को चाहिए कि वह युवाओं के जीवन और देश के भविष्य से खिलवाड़ कर रहे तत्वों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करे।

वैसे, ऐसा नहीं है कि सिर्फ मोबाइल पर ही अश्लील कंटेंट परोसा जा रहा है, आप तमाम प्लेटफॉर्मों पर उपलब्ध वेब सीरीजों को देख लीजिये। अधिकतर में द्विअर्थी संवाद और अश्लील दृश्य भरे पड़े हैं। यही नहीं, हिंदी सिनेमा की भी कुछेक ही फिल्में ऐसी आती हैं जिन्हें परिवार के साथ देखा जा सकता है। हर जगह पसरी इस अश्लीलता का बाल मन पर बड़ा असर पड़ रहा है। इसके चलते बाल्यकाल में ही छात्र गालियां सीख जा रहे हैं साथ ही अश्लील कंटेंट उन्हें गलत कदम उठाने के लिए प्रेरित करता है जिसके चलते किशोरवय उम्र में ही शारीरिक संबंध बनाने या दुष्कर्म करने की खबरें आम हो रही हैं। खास बात यह है कि इस सब पर माता-पिता भी ज्यादा ध्यान नहीं दे रहे हैं क्योंकि वह खुद मोबाइल में व्यस्त हैं।

बहरहाल, इन सब स्थितियों से निकलने के लिए किसी से ज्ञान प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं है। समय आ गया है जब हम आत्मचिंतन करें और देखें कि हमारा परिवार, हमारा समाज किस दिशा में जा रहा है? समय आ गया है कि हम चिंतन करें कि देश ने 2047 तक विकसित भारत बनने का जो लक्ष्य रखा है उसमें हमारा क्या योगदान हो सकता है? निश्चित ही आत्ममंथन से निकलने वाला अमृत देश के लिए और हमारे अपने लिये भी हितकारी होगा।

-नीरज कुमार दुबे

सिर्फ मोबाइल पर ही अश्लील कंटेंट परोसा जा रहा है, आप तमाम प्लेटफॉर्मों पर उपलब्ध वेब सीरिजों को देख लीजिये। अधिकतर में द्विअर्थी संवाद और अश्लील दृश्य भरे पड़े हैं। यही नहीं, हिंदी सिनेमा की भी कुछेक ही फिल्में ऐसी आती हैं जिन्हें परिवार के साथ देखा जा सकता है।

अयोध्या में 48 कंपनियां लेकर आई रोजगार

बता दें कि प्रदेश में मिशन रोजगार अभियान के तहत हर जिले में रोजगार मेलों का आयोजन योगी सरकार द्वारा किया जा रहा है। बीते साढ़े सात साल में साढ़े छह लाख से अधिक सरकारी और दो करोड़ से अधिक युवाओं को निजी सेक्टर में नौकरियों के अवसर प्राप्त हो चुके हैं।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की मंशा के अनुरूप प्रदेश के युवाओं को उनके गृह जनपद में ही रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए जा रहे हैं। इसी क्रम में प्रदेशभर में रोजगार मेलों का आयोजन किया जा रहा है। वहीं रामनगरी अयोध्या में जहां एक तरफ विकास कार्यों को तेज गति से पूरा किया जा रहा है, साथ ही यहां के स्थानीय युवाओं को निजी क्षेत्र की कंपनियां रोजगार देने में भी अच्छी खासी रुचि दिखा रही हैं। 18 अगस्त को अयोध्या आयोजित रोजगार मेले में 36 हजार से अधिक जॉब्स ऑफर लेकर 48 से अधिक कंपनियां शामिल हुईं।

अयोध्या में स्थानीय युवाओं के सामने रोजगार के अवसर लेकर आने वाली कंपनियों में अधिकांश मैन्युफैक्चरिंग, इंजीनियरिंग, टेलीकॉम, हेल्थकेयर, कंस्ट्रक्शन और आईटी जैसे क्षेत्रों से जुड़ी हुई हैं। रोजगार मेले में 10 हजार से अधिक युवाओं ने अपना रजिस्ट्रेशन कराया था, वहीं अबतक इनमें से साढ़े पांच हजार से अधिक युवाओं को प्लेसमेंट का ऑफर भी मिल चुका है। अयोध्या में रोजगार के अवसर लेकर आने वाली कंपनियों में इंस्टा ह्यूमन मैनेजमेंट प्राइवेट लिमिटेड, सुजलॉन एनर्जी, टंबल ड्राई सॉल्यूशन प्राइवेट लिमिटेड, करियर ब्रिज, रीचा आईबीएम जैसी बड़ी कंपनियां शामिल हैं।

इसके साथ ही स्वामी विवेकानंद युवा सशक्तिकरण योजना के अंतर्गत 3415 से अधिक छात्र-छात्राओं को टैबलेट व स्मार्टफोन भी वितरित किए गए। सरकार का उद्देश्य युवाओं को तकनीकी रूप से सक्षम बनाने का है, ताकि भविष्य की चुनौतियों के लिए उन्हें तैयार किया जा सके। जनपदों में रोजगार मेला का आयोजन उत्तर प्रदेश कौशल विकास मिशन, राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान तथा प्रशिक्षण एवं सेवायोजन निदेशालय तथा एमएसएमई विभाग के तत्वावधान में किया जा रहा है।

बता दें कि प्रदेश में मिशन रोजगार अभियान के तहत हर जिले में रोजगार मेलों का आयोजन योगी सरकार द्वारा किया जा रहा है। बीते साढ़े सात साल में साढ़े छह लाख से अधिक सरकारी और दो करोड़ से अधिक युवाओं को निजी सेक्टर में नौकरियों के अवसर प्राप्त हो चुके हैं। स्वयं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ भी जनपद स्तरीय वृहद रोजगार एवं ऋण मेलों में शामिल होकर युवाओं को नियुक्ति पत्र वितरित कर रहे हैं। दो दिन पहले ही में अंबेडकर नगर में भी सीएम योगी ने 6 हजार 7 सौ से अधिक युवाओं को विभिन्न कंपनियों में रोजगार के लिए नियुक्ति पत्र प्रदान किया था। इसके साथ ही 13 हजार से अधिक विद्यार्थियों को टैबलेट देकर टेक्नोलॉजी के जरिए सशक्त किया गया।

जाति जनगणना की जरूरत क्यों?

हाल के लोकसभा चुनाव में इंडिया गठबंधन ने जाति जनगणना के मुद्दे को अपने चुनाव अभियान में महत्वपूर्ण स्थान दिया था। अन्य कारकों के अलावा इस मुद्दे ने भी इंडिया गठबंधन के चुनाव में बेहतर प्रदर्शन में अपना योगदान दिया था। भाजपा के गठबंधन साथी नीतीश कुमार बिहार में पहले ही जाति जनगणना करवा चुके हैं, हालांकि इस मुद्दे को अभी उन्होंने ठंडे बस्ते में रख छोड़ा है। राहुल गांधी ने केन्द्रीय बजट पर चर्चा के दौरान लोकसभा में प्रभावी ढंग से जाति जनगणना की मांग उठाई थी। उन्होंने 'हलवा' का मुद्दा उठाते हुए कहा था कि बजट तैयार करने वाले मुख्यतः ऊंची जातियों के हैं और बजट के लाभार्थी केवल चंद उच्च वर्ग के लोग हैं। जाति जनगणना आवश्यक है। कारण यह कि आरक्षण के प्रतिशत का निर्धारण दशकों पहले किया गया था और तब से लेकर अब तक विभिन्न जातियों की कुल आबादी की हिस्सेदारी में काफी परिवर्तन आ चुका है। मौजूदा सत्ता जिस विचारधारा की है, वह सकारात्मक भेदभाव की नीति अपनाकर हाशियाकृत समुदायों को अन्य समुदायों के समकक्ष लाने के प्रयासों के खिलाफ है। यद्यपि आर्थिक दृष्टि से सक्षम हो जाने मात्र से दलितों की सामाजिक समस्याएं समाप्त नहीं हो जाएंगी, मगर इसमें कोई संदेह नहीं कि बेहतर आर्थिक स्थिति से सामाजिक स्थिति में भी बेहतरी आती है। भारतीय समाज जाति व्यवस्था के चंगुल में बुरी तरह फंसा हुआ है।

इसके चलते जाति प्रथा के पीड़ितों को सामाजिक न्याय, सम्मान और गरिमा मिले, यह सुनिश्चित करवा पाना आसान नहीं है। दलितों को सम्मान और समानता दिलवाने का संघर्ष बहुत लम्बा और कठिन रहा है। इस दिशा में पहला प्रयास ज्योतिबा फुले ने किया था। उन्हें अहसास था कि जाति प्रथा हिन्दू समाज की सबसे बड़ी कमजोरी है। चूंकि दलितों को पढ़ने-लिखने नहीं दिया जाता था, इसलिए फुले ने दलितों के लिए स्कूल खोले। जातिगत पदक्रम को बनाए रखने में लैंगिक असमानता की भी अहम भूमिका है, अतः सावित्रीबाई फुले ने लड़कियों के लिए स्कूल खोले। जातिगत व लैंगिक समानता की स्थापना के ये प्रयास करीब एक सदी पहले किए गए थे। अम्बेडकर ने इन वर्गों को और जागरूक किया। दलितों को समझ में आया कि जमींदार और पुरोहित की जोड़ी, जिसे महाराष्ट्र में शेठजी-भट्टजी कहा जाता है, उनकी सबसे बड़ी पीडक़ है। इसी के चलते ब्राह्मण विरोधी आन्दोलन शुरू हुआ। ब्राह्मणों के प्रभुत्व को चुनौती देने वाले इस आन्दोलन की राह आसान नहीं रही। उच्च जातियों के लोग हिन्दू-मुस्लिम एकता स्थापित करने के गांधीजी के प्रयासों से पहले ही परेशान थे। दलितों की समान अधिकारों की मांग ने उच्च जातियों को और विचलित कर दिया। उच्च जातियों के श्रेष्ठी वर्ग ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) की स्थापना की, जिसका लक्ष्य था हिन्दू राष्ट्र की स्थापना, जो मनुस्मृति पर आधारित है। आरएसएस ने भारत के संविधान का इस आधार पर विरोध किया था कि उसमें भारत के स्वर्णिम अतीत के मूल्यों को जगह नहीं दी गई है। अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के लिए आरक्षण का असर धीरे-धीरे समाज पर पडऩे लगा। इसके साथ ही अफवाहें फैलाने का क्रम भी शुरू हो गया। आरक्षण से लाभान्वित होने वालों को सरकारी दामाद कहा जाने लगा और यह तर्क दिया गया कि वे जिन पदों पर काबिज हैं, वे उनके योग्य नहीं हैं। यह भी कहा गया कि आरक्षण की व्यवस्था योग्य युवाओं की राह में रोड़ा है।

राशिफल

भाद्रपद कृष्ण पक्ष : अष्टमी | **(विक्रम संवत् 2081)**

मेष- (चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ)
प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करने वाले जातकों को सफलता मिल सकती है।

वृष- (ई, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे , वो)
मंगल के प्रभाव से आपकी आमदनी में वृद्धि होगी। आय के नए सोर्स बनेंगे। मंगल के प्रभाव से आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

मिथुन- (का, की, कु, घ, ड , छ, के, हो, हा)
इस अवधि में आप करियर से जुड़ी कोई बड़ी उपलब्धि हासिल कर सकते हैं।

कर्क- (ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डा)
इस अवधि में आपको धन लाभ के योग बनेंगे। आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। मनवांछित फल की प्राप्ति होगी।

सिंह- (मा, मी, मु, मे, मो, टा, टी, टु, टे)
कंधे में, नाक-कान व गला में परेशानी हो सकती है। प्रेम-संतान ठीका भरपूर सहयोग मिलेगा। व्यापार मध्यम रहेगा।

कन्या- (टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो)
विरोधियों पर भारी पड़ेंगे। रुका हुआ कार्य चल पड़ेगा। स्वास्थ्य नरम-गरम। प्रेम-संतान अच्छा। व्यापार भी अच्छा।

तुला- (रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, त)
घरेलू सुख बाधित रहेगा। भूमि, भवन व वाहन की खरीदारी में परेशानी होगी स्वास्थ्य मध्यम। प्रेम-संतान ठीकठाक।

वृश्चिक- (तो, ना, नी, नु, ने, नो, या, यी, यू)
सिरदर्द, नेत्रपीड़ा, अज्ञात भय, खर्च की अधिकता, मानसिक परेशानी बनी रहेगी। प्रेम-संतान की स्थिति अच्छी नहीं है।

धनु- (ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढा, भे)
मानसिक दुविधा बनी रहेगी। यात्रा में कष्ट संभव है। आय में उतार-चढ़ाव बना रहेगा। प्रेम-संतान मध्यम।

मकर- (भो,जा,जी,जू,जे,जो,खा,खी,खू,खे,गा,गी)
जीवनसाथी के स्वास्थ्य पर ध्यान दें। स्वयं के स्वास्थ्य पर ध्यान दें। नौकरी-चाकरी में कोई रिस्क न लें।

कुम्भ- (गू, गे, गो, सा, सी, सु, से, सो, द)
जुआ, सट्टा व लॉटरी में पैसे न लगाएं। जुबान पर नियंत्रण रखें। स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। प्रेम-संतान की स्थिति अच्छी रहेगी।

मीन- (दी, दु, झ, ध, दे, दो, च, चा, चि)
स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव बना रहेगा। एक भ्रामक-सा मन रहेगा। स्वास्थ्य मध्यम। प्रेम-संतान की स्थिति अच्छी।

जनवादी महिला समिति ने किया प्रदर्शन

नोएडा (चेतना मंच)। महिला यौन शोषण/ उत्पीड़न की बढ़ती घटनाओं के विरोध में अखिल भारतीय जनवादी महिला समिति की कार्यकर्ताओं ने गांव बरौला सेक्टर- 49 पर जुलूस निकालकर विरोध प्रदर्शन किया।

प्रदर्शन को संबोधित करते हुए अखिल भारतीय जनवादी महिला समिति की जिला प्रभारी आशा यादव ने महिला उत्पीड़न की बढ़ती घटनाओं पर कहा कि महिला को जब तक चीज-उपभोग की वस्तु-समझा जाता रहेगा तब तक उसके साथ यह खिलवाड़ होता रहेगा, उसका अपमान होता रहेगा, यौन उत्पीड़न होता रहेगा।

उन्होंने कहा कि ये एक राज्य की बात नहीं। कुछ ही दिन पहले कोलकाता के आरजीके अस्पताल में एक डॉक्टर के साथ जघन्य सामूहिक बलात्कार और निर्मम हत्या का मामला सामने आया। इस घटना के खिलाफआवाज उठते उठते ही बिहार के मुजफ्फरपुर में एक दलित लड़की के साथ बेखौफ़ सामूहिक बलात्कार और हत्या, महाराष्ट्र के बदलापुर में यौन उत्पीड़न की घटना, और उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड से बलात्कार की घटनाओं की ख़बरें आईं।

प्रदर्शन को संबोधित करते हुए समिति की जिला नेता चंदा बेगम, रेखा चौहान, लता सिंह, पिंकी, सरोज देवी ने कहा कि हम सरकार और प्रशासन को चेता रहे हैं कि न्यायिक कार्यवाही में ढील बर्दाश्त नहीं करेंगे। प्रदर्शन को सीटू जिलाध्यक्ष गंगेश्वर दत्त शर्मा, सीपीआई एम बरौला ब्रांच सचिन धर्मपाल चौहान, सीटू नेता राजकरण सिंह, राकेश चौधरी, जयानंद आदि ने भी संबोधित किया।

सपा जिला कार्यालय पर हुई संविधान मान स्तंभ की स्थापना

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। समाजवादी पार्टी जिला कार्यालय एक कार्यक्रम का आयोजन कर संविधान मान स्तंभ की स्थापना की गई। समाजवादी पार्टी के मुख्य सचेतक एवं पूर्व कैबिनेट मंत्री कमाल अख्तर मुख्य अतिथि के रूप में तथा पूर्व मंत्री राकेश यादव विशिष्ट अतिथि के रूप में शामिल हुए।

इस मौके पर सपा कार्यकर्ताओं द्वारा संविधान रक्षा की शपथ ली गई तथा पार्टी के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं को स्मृति चिन्ह एवं शॉलभेंट कर सम्मनित किया गया। इस मौके पर पूर्व कैबिनेट मंत्री कमाल अख्तर ने कहा कि भाजपा सरकार में पिछड़े, दलित, अल्पसंख्यकों एवं महिलाओं का उत्पीड़न हो रहा है। भाजपा संविधान को खत्म कर पिछड़े दलितों के हकों को मारना चाहती है। उन्होंने कहा कि सामाजिक अन्याय के विरूद्ध समाजवादी पार्टी सदैव खड़ी है और संविधान को बचाने के लिए संकल्पित है और कहा कि आज देश का अन्नदाता अपने को ठगा महसूस कर रहा है।

किसानों को फसलों की सही कीमत नहीं मिल रही है। नौजवान नौकरी के लिए दर-दर भटक रहे हैं। भाजपा सरकार निजीकरण को बढ़ावा दे रोजगार और आरक्षण को खत्म कर रही है। इस मौके पर पूर्व मंत्री राकेश यादव ने कहा कि आज देश में रिकार्ड तोड़ बेरोजगारी है और महंगाई चरम सीमा पर है। चौतरफा भ्रष्टाचार है। देश के सौहार्द को खत्म करने की साजिश हो रही है। देश की एकता, भाईचारा और एकता का तानाबाना तोड़ने का काम भाजपा कर रही है। समाजवादी सरकार ने विकास के लिए बहुत काम किया, लेकिन भाजपा सरकार की द्वेष भावना के कारण आज प्रदेश का विकास पूरी तरह ठप्प है। इस मौके पर जिला अध्यक्ष सुधीर भाटी ने कहा कि जनता भाजपा सरकार से परेशान है और अबकी बार विधानसभा में उत्तर प्रदेश से उसे उखाड़ फेंकने का काम करेगी।

इस अवसर पर राष्ट्रीय प्रवक्ता राजकुमार भाटी वीर सिंह यादव, फकीरचंद नागर, इंदर प्रधान, राकेश यादव, नरेंद्र नागर, प्रताप चौहान, गजराज नागर चेयरमेन, दीपक विग, सुनील देवटा, यूनुस प्रधान, कपिल ननका, कृशांत भाटी, फिरदौस सहनाज, सुनीता यादव, राजू नंबरदार, संजीव त्यागी, रामसरन नागर, परमेंद्र भाटी, मनोज भाटी, मिंटी खारी, प्रवीण भाटी, मेहंदी हसन, मोहित यादव, दीपक नागर, कंवर नादिर अली, अकबर खान, विपिन सेन, अनिल प्रजापति, हुकम सिंह भारती, विनीत यादव, राकेश गौतम, अजय चौधरी, सुरेंद्र नागर, अवनीश भाटी, सुनील भाटी, विनोद यादव, अमित रौनी, विकास भनौता, नीरज भाटी, वकील सिद्दकी, संजीव नागर, विनोद लोहिया, देवेंद्र अवाना, महेश भाटी, जयकरण चौधरी, अक्षय चौधरी, हरवीर प्रधान, विक्रम टाइगर, नवीन भाटी, अक्षय सिंह भाटी, योगेश गौतम, गजेंद्र यादव, सुभाष भाटी, सीपी सोलंकी, विकास जतन, पवन जोगी, राहुल आर्यन, लखन यादव, समय भाटी, अमन नागर, लोकेश भाटी, हैप्पी पंडित, विपिन कसाना, महेश जाटव, मुरारी लाल गौतम, संदीप पाटिल, चौधरी हसरुद्दीन, प्रेमपाल रावल, यशपाल भाटी, शाहरुख भाटी, आजाद दौला, सुमित राणा, विनय शर्मा, जावेद अंसारी, दिनेश बाल्मीकि, राजेश गौंड आदि मौजूद रहे।

राष्ट्रीय सचिव बने आशु अट्टा

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। किसान मज़दूर संघर्ष मोर्चा की बैठक चाई-4 कैंप कार्यालय पर राष्ट्रीय उपाध्यक्ष आलोक नागर की अध्यक्षता में हुई जिसमें संगठन का विस्तार किया गया।

इस संबंध में संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉक्टर विकास प्रधान ने कहा कि आज किसान नौजवान की आवाज़ को मज़बूत करने के लिए दूसरे संगठनों से भी लोग किसान मज़दूर संघर्ष मोर्चा की मज़बूती को देखकर जुड़ रहे हैं। इसी क्रम में आज विनोद कसाना निवासी डूंगरपुर रीलका को संगठन का युवा जिलाध्यक्ष मनोनीत किया है। एवं आशु अटटा को राष्ट्रीय सचिव बनाया गया है एवं दर्जनों साथियों ने संगठनों की सदस्यता ग्रहण की है आगामी 10 सितम्बर को जेवर तहसील पर होने वाली महापंचायत को सफल बनाने के लिए जन जागरूक अभियान चलाने का निर्णय लिया है।

जनपद गौतमबुद्ध नगर के अंदर प्राधिकरण किसानों का शोषण कर रहे हैं जल्द ही तीनों प्राधिकरणों का घेराव किया जाएगा। इस मौक़े पर डा विकास प्रधान, आलोक नागर, लौकेश भाटी, कृष्ण नागर, आशु अटटा, हरेंद्र नागर, सुन्दर कसाना, विनोद कसाना, मनीष नागर, विपिन कसाना, निक्की भाटी, भारत नागर, विकेश यादव आदि लोग मौजूद रहे।

भाजपा ने किया कार्यशाला का आयोजन

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। भारतीय जनता पार्टी ने मंडलों पर भारतीय जनता पार्टी सदस्यता अभियान मंडल कार्यशाला का आयोजन किया। जिसमे मुख्य रूप से सूरजपुर मंडल में सदस्यता अभियान के ज़िला संयोजक राकेश राणा रहे। सूरजपुर मंडल सदस्यता अभियान कार्यशाला कार्यक्रम की अध्यक्षता मंडल अध्यक्ष मनोज भाटी ने की कार्यशाला का संचालन मंडल महामंत्री मनोज प्रधान ने किया। सदस्यता अभियान कार्यशाला में मण्डल प्रभारी मंडलाध्यक्ष मोर्चा प्रकोष्ठ प्रकल्पों के मंडल कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। कार्यशाला को संबोधित करते राकेश राणा ने कहा 2024 भाजपा सदस्यता अभियान 1 सितंबर को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नडडा शुरूवात करायेंगे जो की 25 सितम्बर तक चलेगा। दूसरा चरण 1 अक्टूबर से 15 अक्टूबर तक चलेगा और प्रत्येक बूथ पर भाजपा ने 8800002024 टोल फ्री नम्बर पर मिस्ड कॉल करके प्रत्येक बूथ पर कम से कम 200 नये लोगों को सदस्यता दिलाने का कार्य करेंगे ओबीसी आयोग सदस्य विजेंद्र भाटी ने कहा सदस्यता पार्टी का मूल आधार है। सदस्यता सभी वर्गों के बीच जाकर करें मनोज भाटी मूलचन्द प्रधान ने कहा कि भाजपा संगठन ने महापर्व सदस्यता अभियान की तैयारी को लेकर मण्डलों में कार्यशाला का आयोजन हो रहा है। हम सभी कर्मठ कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर मंडल में सदस्यता के लक्ष्य को पूरा करेंगे।

इस अवसर पर मुख्यरूप से ओबीसी आयोग सदस्य बिजेंद्र भाटी, राकेश राणा, मीडिया प्रभारी कर्मवीर आर्य, सांसद प्रतिनिधि बलराज भाटी, रवि जिन्दल, इन्द्र नागर, विजय रावल, सत्यपाल शर्मा, गुरुदेव भाटी, सतवीर भाटी, मनोज भाटी, राजेश ठेकेदार, मनोज प्रधान, विशाल कुमार, संजीव चौहान, अर्पणा त्रिपाठी, उषा वत्स, अनुज कोशिक, विनोद पंडित, अशोक शर्मा, श्यामवीर भाटी, मुकेश शर्मा, चेतन शर्मा, आदि दर्जनों मंडल कार्यकर्ता सदस्यता अभियान कार्यशाला में उपस्थित रहे।

धूम-धाम से मनाया श्रीकृष्ण जन्माष्टमी

दनकौर (चेतना मंच)। श्रीमति सुरेश देवी कॉन्वेंट स्कूल तुलसीनगर दनकौर में जन्माष्टमी का त्योहार बड़े ही हर्ष के साथ मनाया गया। प्रोग्राम का संचालन खुशी चौहान और सचिन मलिक ने किया तथा कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय के प्रबंधक अचमपाल कसाना, फाउंडर मैंबर यशपाल कसाना, प्रिंसिपल गोल्डेन सैर के द्वारा किया गया और तत्पश्चात मां शारदे और राधा कृष्ण के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन किया गया और साथ ही विद्यालय के प्रबंधक अचमपाल कसाना ने बच्चों की शिक्षा को ओर अच्छा बेहतर बनाने के लिए तथा कृष्ण जन्माष्टमी के विषय में जानकारी और दिशा निर्देश दिए उसके बाद छात्र / छात्रों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। इस अवसर पर सचिन भाटी, सुमित वर्मा, खुशी चौहान, पूनम वरे, अतुल सर, पंकज शर्मा, पिंकी, सना, नीतू, सोफिया, सबनम, अनुराधा, अपूर्वा, दीपेश शर्मा, खुशी शर्मा, मांशी, वंदना मेम, सोनिया, पुष्पा नागर, भावना शर्मा, प्रज्ञा, चंचल, रजनी, सविता, हेमा शर्मा, निशि, प्रीति, आदि अध्यापक, अध्यापिकाएं व गणमान्यजन उपस्थित रहे।

न्याय मिलने तक जारी रहेगा धरना : वैष्णव

जन्माष्टमी की दी बधाई

नोएडा (चेतना मंच)। भारतीय किसान यूनियन (बलराज) के नोएडा महानगर अध्यक्ष योगेश वैष्णव इलाहाबांस ने कहा कि पैरामाउंट गोल्फ सोसायटी पर चल रहा संगठन का धरना आज भी जारी रहा। उन्होंने कहा कि बिल्डर की मनमानी से सोसायटी वास काफी परेशान है। उन्होंने कहा कि बिल्डर की मनमानी किसी कीमत पर बर्दाश्त नहीं की जाएगी और जब तक लोगों को न्याय नहीं मिल जाता तब तक यूनियन का यह धरना जारी रहेगा।

उन्होंने कहा कि किसानों के साथ अन्याय करने वाले अधिकारियों को भी चिन्हित कर उनके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा कि जन्माष्टमी का त्योहार पूरे देश में हर्षोउल्लास के साथ मनाया जा रहा है और आज का दिन हमारे लिए विशेष महत्वपूर्ण है। उन्होंने जन्माष्टमी के अवसर पर सभी देशवासियों को शुभकामनाएं एवं बधाई दी है।

सपा के बढ़ते प्रभाव से बौखला गयी है भाजपा: कमाल

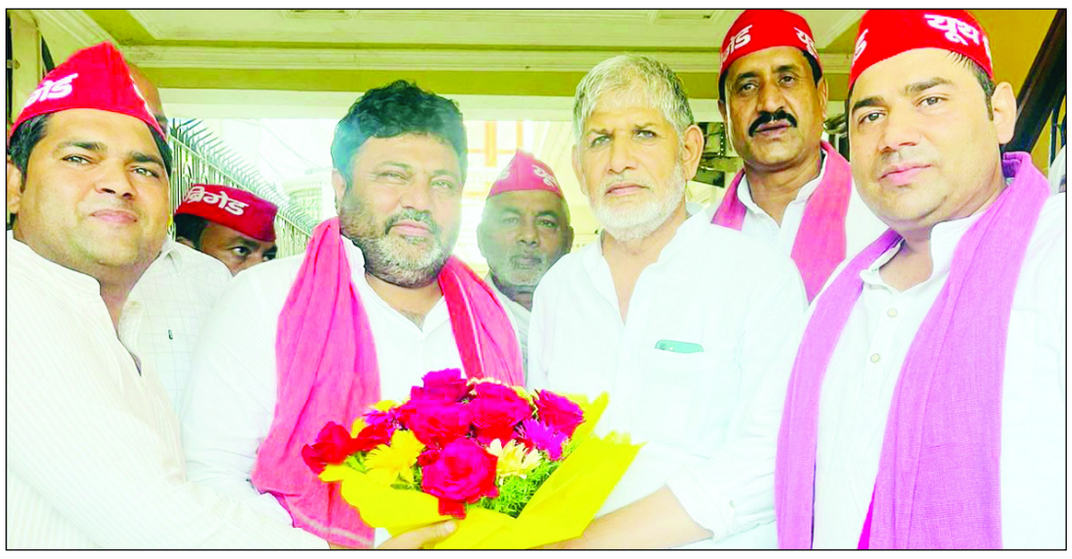

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। ग्रेटर नोएडा समाजवादी पार्टी के मुख्य सचेतक और सपा विधायक कमाल अख्तर कल गौतम बुद्ध नगर पहुंचे और उन्होंने पार्टी कार्यकर्ताओं को चुनाव में जीत का मंत्र दिया। सपा के मुख्य सचेतक एवं विधायक कमाल अख्तर ने कहा कि समाजवादी पार्टी उत्तर प्रदेश में हो रहे 10 विधानसभा के उपचुनाव में विजय श्री हासिल करने जा रही है।

उन्होंने कहा कि भाजपा सपा के बढ़ते प्रभाव से बौखला गई है कार्यक्रम के बाद कमाल अख्तर मुलायम सिंह यादव यूथ ब्रिगेड के जिला अध्यक्ष को कुंवर नादिर शाह के हल्दौनी गांव स्थित आवास पर पहुंचे और वहां उन्होंने पार्टी कार्यकर्ताओं से मुलाकात की इस अवसर पर कमाल अख्तर का यूथ बिग्रेड के जिला अध्यक्ष कुवंर नादिर ने में स्वागत किया।

इस मौके पर मौजूद लोगों में मुख्य रूप से संजय यादव, इमरान चौधरी, अनुज भाटी, नीतीश भाटी, गुलजार हाजी, भूरे अरुण कुमार, काले चौधरी, सिम्मी भाटी, विनय शर्मा, आदि कार्यकर्ता मौजूद रहे।

पथ विक्रेताओं का सम्मेलन सम्पन्न

नोएडा (चेतना मंच)। पथ विक्रेता सीपीआई (एम) नोएडा ब्रांच का सम्मेलन कामरेड हरी गुप्ता की अध्यक्षता में पार्टी जिला कार्यालय सेक्टर-8 पर संपन्न हुआ।

सम्मेलन में पार्टी ब्रांच के पिछले कामकाज की समीक्षा और भविष्य की कार्य योजना पर विचार विमर्श किया गया। साथ ही पथ विक्रेताओं की समस्याओं/उत्पीड़न की बढ़ रही घटनाओं पर सम्मेलन में चिंता व्यक्त की गई। तथा पथ विक्रेताओं को संगठित कर आंदोलन चलाने का निर्णय लिया गया।

सम्मेलन में सीपीआई एम पथ विक्रेता ब्रांच सदस्य कामरेड पूनम देवी, हरी गुप्ता, मंजू राय, कपिल पासवान, सुशील उर्फ राजू आदि ने हिस्सा लिया।

मोदी के मन की बात से प्रेरणा ले कार्यकर्ता : रामनिवास यादव

नोएडा (चेतना मंच)। भाजपा कार्यकर्ताओं ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'मन की बात' कार्यक्रम के 113वें एपिसोड को नोएडा महानगर के महाराणा प्रताप मंडल के ग्राम चौड़ा सादतपूर में बूथ संख्या-70 पर सुना।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप मे भाजपा युवा मोर्चा के जिला अध्यक्ष रामनिवास यादव, बूथ अध्यक्ष विकास दीक्षित, सतीश भारद्वाज,शिव ठाकुर, रितिक ठाकुर, मोनू जोगी, राजेश शर्मा, अमित कुमार शर्मा, अमरजीत सिंह, अंकित चौधरी, विपिन पंडित, डॉ प्रसाद सतपाल शर्मा आदि मौजूद थे।

रामनिवास यादव ने कहा कि सभी मोदी के 'मन की बात' को सुनकर जीवन में आत्मसात करें। हर एपीसोड नई प्रेरणा तथा नई सीख देता है।

5 सितंबर से लखनऊ में शिक्षा मित्रो का अनिश्चित कालीन धरना

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। उत्तर प्रदेश प्राथमिक शिक्षामित्र संघ की महत्वपूर्ण बैठक विद्यालय सिरसा में हुई। जिला संरक्षक राजीव शर्मा ने बैठक की अध्यक्षता करते हुए स्पष्ट किया कि अब हमारे संघर्ष का अन्तिम समय आ चुका है क्योंकि अब शिक्षामित्रों ने मजबूरन आर पार की लड़ाई के लिए कमर कस ली है।संघ के जिला अध्यक्ष जगवीर भाटी ने कहा कि 5 सितंबर को एक तरफ़ सरकार शिक्षक दिवस पर शिक्षकों को सम्मानित करेगी तो दूसरी तरफ हम शिक्षामित्रों को देखते हैं क्या इनाम देगी क्योंकि जिले से अधिक से अधिक शिक्षामित्र विभिन्न साधनों से 4 सितंबर को अनिश्चित कालीन धरने के लिए लखनऊ कूच करेगा।

संघ के महामंत्री देवराज भाटी ने कहा अब ये सरकार की सभी का साथ, सभी का विकास एजेंडा की परीक्षा होगी, क्योंकि पिछले 7 सालों में सरकार की हठ धर्मिता के कारण अभी तक लगभग 12 हजार शिक्षामित्रों की मृत्यु हो चुकी है। बैठक आ संचालन जिला उपाध्यक्ष कालूराम ने किया। उपाध्यक्ष सुनील भाटी ने कहा इन्होंने ही 3 माह के भीतर न्याय देने के वादा किया था जो आज 7 साल बाद भी पूरा नहीं किया।

ब्लॉक अध्यक्ष दादरी नरेश खारी ने जानकारी दी कि 5 सितंबर से लखनऊ में होने वाले अनिश्चित कालीन विशाल धरना प्रदर्शन के लिए तैयारियों को अंतिम रूप दे दिया गया है जिसकी विस्तृत जानकारी आगामी 31 अगस्त को होने वाली जेवर की बैठक में दी जाएगी। बिसरख ब्लॉक के ब्लॉक सनोज कुमार ने महिला शिक्षा मित्रो से अधिक संख्या में लखनऊ चलने की अपील की।ब्लॉक अध्यक्ष दनकौर बालकिशन शर्मा ने कहा कि यह लड़ाई शिक्षा मित्रो की आर आर की हे। महिला प्रकोष्ठ अध्यक्ष संतोष ने कहा कि धरने में महिला शिक्षा मित्र भी अधिक संख्या में प्रतिभाग करेगी। बैठक में रघुराज शर्मा, बृजपाल सिंह, रंजीत सिंह, उमरवेग, रामकिशोर संजयप्रकाश, कपिल, महावीर, आदि ने अपनी बात रखी। बैठक में संजय भाटी नरेंद्र कुमार संदीप भाटी, गीता, प्रताप ,प्रमोद कुमार करतार सिंह, प्रदीप कुमार, जितेंद्र, हूँरमल,अशोक कुमार, ज्ञानेंद्र कुमार आदि ने प्रतिभाग किया।

दैनिक चेतना मंच
भगवान हनुमान बजरंग बली के अवतार श्री बालाजी (मेंहदीपुर) के संरक्षण में संचालित किया जाता है। समाचार-पत्र का यह अंक भी उन्हीं के चरणों में समर्पित है।
डाक पंजी. सं. L-10/GBD-574/99
RNI No. 69950/98
स्वामी मुद्रक प्रकाशक रामपाल सिंह रघुवंशी ने बीएफएल इन्फोटेक लि. सी-9, सेक्टर-3, नोएडा, गौतमबुद्धनगर (यू पी.) से छपवाकर, ए-131 सेक्टर-83, नोएडा से प्रकाशित किया।
संपादक-रामपाल सिंह रघुवंशी
Contact:
0120-2518100, 4576372, 2518200
Mo.: 9811735566, 8750322340
E-mail:
chetnamanch.pr@gmail.com
raghuvanshirampal365@gmail.com
raghuvanshi_rampal@yahoo.co.in
www.chetnamanch.com

खास खबर

जोमैटो ने अपने ग्राहकों के लिए नई सेवा शुरु की

नई दिल्ली। खाने को डिलीवर करने वाली कंपनी जोमैटो ने अपने ग्राहकों के लिए एक नई सेवा शुरू की है। बता दें कि जोमैटो के एक वरिष्ठ अधिकारी ने हाल ही में ऑर्डर शेड्यूलिंग नाम की एक नई सुविधा की घोषणा की है, जो उपयोगकताओं को जोमैटो का उपयोग करके अपने भोजन के ऑर्डर शेड्यूल करने की अनुमति देगा। नया जोमैटो ऑर्डर शेड्यूलिंग फीचर 1,000 रुपये से अधिक के ऑर्डर के लिए शुरू किया गया है। नया जोमैटो फीचर दिल्ली एनसीआर, बेंगलुरु, मुंबई, चंडीगढ़, जयपुर, अहमदाबाद और लखनऊ में लगभग 13,000 आउटलेट द्वारा लागू किया जाएगा। अधिकारी ने कहा कि इन रेस्तरांओं में ऐतिहासिक रूप से स्टॉक में बड़ी मात्रा में व्यंजन होते हैं और रसोई-तैयारी-समय की स्थिरता दिखाई देती है और अधिक रेस्तराँ और शहर जोड़े जा रहे हैं। हम जल्द ही इसे सभी ऑर्डर के लिए बढ़ा देंगे।

पेट्रोल और डीजल की कीमतें स्थिर

नई दिल्ली। वैश्विक स्तर पर कच्चे तेल की कीमतों में उबाल जारी रहने के बावजूद घरेलू स्तर पर पेट्रोल और डीजल के दाम में रविवार को कोई बदलाव नहीं हुआ है, जिससे दिल्ली में पेट्रोल 94.72 रुपये प्रति लीटर तथा डीजल 87.62 रुपये प्रति लीटर पर पड़े रहे। तेल विपणन करने वाली प्रमुख कंपनी हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कार्पोरेशन की वेबसाइट पर जारी दरों के अनुसार देश में रविवार को पेट्रोल और डीजल की कीमतों में कोई बदलाव नहीं हुआ है। दिल्ली में इनकी कीमतों के यथावत रहने के साथ ही मुंबई में पेट्रोल 104.21 रुपये प्रति लीटर पर और डीजल 92.15 रुपये प्रति लीटर पर रहा। वैश्विक स्तर पर साप्ताहांत पर अमेरिकी क्रूड 2.71 प्रतिशत उबलकर 74.96 डॉलर प्रति बैरल पर पहुंच गया। इसी तरह लंदन ब्रेंट क्रूड 2.48 प्रतिशत की तेजी लेकर 79.02 डॉलर प्रति बैरल पर रहा। दिल्ली में पेट्रोल 94.72 रुपए प्र?ति लीटर, डीजल 87.62 प्र?ति लीटर, मुंबई में पेट्रोल 104.21 रुपए प्रति लीटर, डीजल 92.15 रुपए प्रति लीटर, चेन्नई 100.75 रुपए प्रति लीटर, डीजल 92.34 रुपए प्रति लीटर और कोलकाता पेट्रोल 103.94 रुपए प्र?ति लीटर, डीजल 90.76 रुपए प्रति लीटर है।

मारुति ने दो कारों में ईएसपी को स्टैंडर्ड को किया शामिल

नई दिल्ली। मारुति सुजुकी कंपनी ने अपनी सस्ती कारों की सेफ्टी की और कदम बढ़ाते हुए अल्टो और एस-प्रेसो में एक बड़ा अपडेट दिया है। कार निमार्ता ने अब इन दोनों कारो में इलेक्ट्रानिक स्टेबिलिटी प्रोग्राम (ईएसपी) को स्टैंडर्ड तौर पर शामिल कर लिया है।
खास बात यह है कि नया फीचर जोड़ने के बाद भी कंपनी ने कीमतों में कोई बढ़ोतरी नहीं की है। एस-प्रेसो और ऑल्टो के10 ब्रांड के एचईएआरटीईसीटी प्लैटफॉर्म पर आधारित एंट्री-लेवल किफायती छोटी कारें हैं। इन वाहनों में डुअल फ्रंट एयरबैग, रिवर्स पार्किंग सेंसर, एबीएस के साथ ईबीडी, कोलैप्सिबल स्टीयरिंग कॉलम और इंजन इम्मोबिलाइजर जैसे कुछ सेफ्टी फीटर्स मिल जाते हैं। ईएसपी का मतलब इलेक्ट्रॉनिक स्टेबिलिटी प्रोग्राम होता है।

दिनदहाड़े गोलीबारी कर दुकान में लूट ,बाजार बंद

नवादा। नवादा जिले के नारदीगंज बाजार में रविवार को दिनदहाड़े चार की संख्या में रहे हथियारबंद गुंडो ने शगुनप्लाई एवं पेंट हाउस नामक दुकान में घुसकर रंगदारी की मांग को लेकर गोलीबारी की ।गोली बारी में दुकान का सामान नष्ट हो गया ।दुकानदार बाल-बाल बच गया ।दुकानदर के गल्ले में रखे हुए 10000 रु के साथही दुकानदार ऋषि कुमार के गले से सोने का चेन छीनकर अपराधी भाग निकले । दुकानदार ऋषि कुमार ने थाने में लिखित सूचना देकर बताया कि नारदीगंज थाने के फलदू गांव के नीतीश कुमार ,बरियो गांव के सुभाष कुमार, दलापुर गांव के विक्रम कुमार तथा दरियापुर गांव के कौशल यादव हथियार से लैश होकर दुकान में पहुंचे तथा रंगदारी की मांग को लेकर गाली गलौज करने लगे। मारपीट करने के बाद गोलीबारी शुरू कर दी।

विदेशी निवेशकों ने बांड बाजार में किया 11,366 करोड़ का निवेश

एजेंसी

नई दिल्ली। देश के बॉन्ड बाजार में विदेशी निवेशकों ने इस महीने अब तक 11,366 करोड़ रुपये का निवेश किया है। इसके साथ बॉन्ड क्षेत्र में पूंजी प्रवाह इस साल एक लाख करोड़ रुपये के पार कर गया है। भारत के बॉन्ड बाजार में विदेशी निवेशकों की मजबूत खरीदारी का कारण इस साल जून में जेपी मॉर्गन के उभरता बाजार सरकारी बॉन्ड सूचकांक में भारत को शामिल किये जाने को दिया जा सकता है। डिपॉजिटरी के आंकड़ों के मुताबिक विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) ने इस महीने 24 अगस्त तक बॉन्ड बाजार में 11,366 करोड़ रुपये लगाये हैं। जुलाई में 22,363 करोड़ रुपये, जून में 14,955 करोड़ रुपये और मई में 8,760 करोड़ रुपये के निवेश हुए थे। इससे पहले

उन्होंने अप्रैल में 10,949 करोड़ रुपये की ?निकासी की थी। बाजार विश्लेषकों ने कहा कि अक्टूबर 2023 में भारत के शामिल होने की घोषणा के बाद से एफपीआई वैश्विक बॉन्ड सूचकांकों में शामिल होने की उम्मीद में अपने निवेश को आगे बढ़ा रहे हैं और इसके शामिल होने के बाद भी पूंजी प्रवाह मजबूत बना हुआ है। वहीं येन कैरी ट्रेड यानी निम्न ब्याज दर वाले वाले देश से कर्ज लेकर दूसरे देश की परिसंपत्तियों में निवेश को समाप्त करने, अमेरिका में मंदी की आशंका और वैश्विक स्तर पर जारी संघर्षों के कारण, इस महीने अब तक एफपीआई ने इक्विटी से 16,305 करोड़ रुपये से अधिक निकाले हैं। मॉर्निंगस्टार इन्वेस्टमेंट रिसर्च इंडिया के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि बजट में इक्विटी निवेश पर पूंजीगत लाभ कर में वृद्धि की घोषणा ने इस बिकवाली को काफी हद तक बढ़ाया है। उन्होंने कहा कि इसके अलावा भारतीय शेयरों के उच्च मूल्यांकन के कारण एफपीआई सतर्क हैं। साथ ही अमेरिका में रोजगार के कमजोर आंकड़े से मंदी की बढ़ती आशंका, नीतिगत दर में कटौती के समय को लेकर अनिश्चितता और येन कैरी ट्रेड समाप्त होने से भी एफपीआई सतर्क रुख अपना रहे हैं। कुल मिलाकर भारत एफपीआई के जरिये दीर्घकालिक निवेश आकर्षित कर रहा है और इस मामले में स्थिति अनुकूल बनी हुई है। बीडीओ इंडिया के एक भागीदार ने कहा कि वैश्विक मंदी, पश्चिम एशिया और पड़ोसी देशों में भू-राजनीतिक संकट के बीच भारत अभी भी आकर्षक निवेश स्थल बना हुआ है। इससे विदेशी निवेशक निवेश के लिए आगे आ रहे हैं।

बीमा कंपनी महाराष्ट्र के किसानों को करेगी 225 करोड़ का भुगतान

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने एक बीमा कंपनी को महाराष्ट्र के परभणी जिले के करीब दो लाख किसानों के 225 करोड़ रुपये तक के लंबित दावों का एक सप्ताह के भीतर भुगतान करने का निर्देश दिया। यह आदेश 21 अगस्त को नांदेड़ में केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान की किसानों के साथ बातचीत के बाद आया है, नांदेड़ में सोयाबीन फसल बीमा दावों का मुद्दा उठाया गया थाद्य। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग ने 22 अगस्त को राष्ट्रीय तकनीकी सलाहकार समिति (टीएसी) की बैठक की। आधिकारिक बयान में कहा गया कि समिति ने फसल कटाई के जुड़े प्रयोगों पर बीमा कंपनी की आपत्तियों को खारिज कर दिया और लंबित दावों के निपटान का आदेश दिया। बयान में बीमा कंपनी का नाम नहीं बताया गया है। केंद्रीय टीएसी ने बीमा कंपनी को सात दिनों के भीतर बकाया राशि का भुगतान करने का औपचारिक आदेश जारी किया। इस फैसले से परभणी जिले के करीब दो लाख किसानों को फायदा होगा। इन किसानों को 200 से 225 करोड़ रुपये का भुगतान किया जाएगा। नांदेड़ की अपनी यात्रा के दौरान परभणी जिले के किसानों द्वारा समस्या के बारे में उन्हें सूचित किए जाने के बाद चौहान ने कृषि अधिकारियों को तत्काल समस्या का समाधान करने का निर्देश दिया था।

बजाज आलियांज लाइफ ने की पहली तिमाही में मजबूत वृद्धि की राह

एजेंसी

BAJAJ Allianz
LIFE GOALS. DONE.

रांची। भारत की अग्रणी निजी जीवन बीमा कंपनियों में से एक बजाज आलियांज लाइफ इंश्योरेंस ने अपने सभी वितरण चैनलों की शानदार वृद्धि के दम पर वित्त वर्ष 2025 की पहली तिमाही में शानदार प्रदर्शन किया। इसके कारण कंपनी का ईडिविजुअल रेटेड न्यू बिजनेस (आईआरएनबी) 26% बढ़कर 1,294 करोड़ रुपये पर पहुंच गया, जबकि वित्त वर्ष 2024 की पहली तिमाही में यह 1,028 करोड़ रुपये था। बजाज आलियांज लाइफ अपने वितरण चैनलों में रणनीतिक निवेश करना जारी रखती है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि यह देश भर में अपने ग्राहकों के लिए मौजूद है और उनके जीवन लक्ष्यों को सहज तरीके से पूरा कर सके। तिमाही के लिए इसके व्यावसायिक चैनल एजेंसी, संस्थागत व्यवसाय और मालिकाना बिक्री बल ने क्रमशः 15%, 27% और 75% की आईआरएनबी वृद्धि दर्ज करके इसकी वृद्धि को बढ़ावा दिया (24 की तुलना में)। कंपनी द्वारा हासिल की गई वृद्धि पर टिप्पणी करते हुए बजाज आलियांज लाइफ के एमडी और सीईओ तरुण चुघ ने कहा, देश भर में अपने सभी ग्राहकों के लिए उपलब्ध होने को सुनिश्चित करने पर हमारा ध्यान केंद्रित है, हमने रणनीतिक तरीके से अपनी उपस्थिति बढ़ाने की यात्रा शुरू की है। आज, 545 से अधिक शाखाओं, 1.53 लाख एजेंटों, 35 विश्वसनीय बैंक साझेदारियों, 25 हजार कर्मचारियों और एक मजबूत डिजिटल उपस्थिति के साथ, हम मौजूदा और नए ग्राहकों तक प्रभावी तरीके से पहुंच रहे हैं। न केवल घरेलू ग्राहक, बल्कि एनआरआई भी हमारी उपस्थिति से प्रभावी रूप से लाभ उठा रहे हैं। हम अपने सभी हितधारकों की खुशी के लिए अपनी भागीदारी और उपस्थिति को मजबूत करना जारी रखेंगे, क्योंकि हम इस वर्ष नियामक परिवर्तनों और स्वस्थ आर्थिक वातावरण के साथ आगे बढ़ रहे हैं। वित्त वर्ष 2025 की पहली तिमाही के प्रमुख आंकड़ेः व्यक्तिगत रेटेड नया व्यवसाय (आईआरएनबी) 26% बढ़कर 1,294 करोड़ पर पहुंच गया, जो कि वित्त वर्ष 24 की पहली तिमाही में 1,028 करोड़ था सकल लिखित प्रीमियम (जीडब्ल्यूपी) में 24% की वृद्धि दर्ज की गई, जो कि वित्त वर्ष 24 की पहली तिमाही में 4,058 करोड़ की तुलना में 5,018 करोड़ पर पहुंच गया।

श्री राम व सीता के अयोध्या आगमन में टिमटिमाएंगे 10 हजार दीये

एजेंसी

मुंबई। सोनी सब के श्रीमद् रामायण ने कहानी के अगले चरण में प्रवेश किया है। श्री राम और सीता 14 वर्ष के वनवास के बाद अयोध्या लौट आए हैं। उनकी वापसी की खुशी दिवाली के अवसर के रूप में मनाई जाती है, जहां अयोध्या के निवासियों ने अपने प्रिय दिव्य जोड़े के स्वागत के लिए दीये जलाए। इस उत्सव को खास बनाने के लिए एक लुभावना दिवाली सीक्वेंस शूट किया गया है। 10 दीयों की जगमगाहट से सजाया गया है, जो अंधकार पर प्रकाश की जीत का प्रतीक है। यह शानदार आयोजन दिवाली के दिव्य माहौल को जीवंत बनाने के लिए किया गया है। यह दर्शकों के लिए यादगार दृश्य की दावत होगी। भव्य दृश्यों के साथ-साथ इस एपिसोड में प्रसिद्ध बॉलीवुड कोरियोग्राफर चिन्नी प्रकाश की ओर से विशेष रूप से कोरियोग्राफ किया गया डांस सिक्वेंस होगा। यह डांस न केवल दिवाली के उत्सव को खास बना देगा, बल्कि इसे दो दिनों में शूट किया गया है। राम की भूमिका निभाने वाले सुजय रेऊ ने कहा, महायुद्ध के बाद राम की अयोध्या वापसी भावनाओं और महत्व से भरी यात्रा है। यह अयोध्यावासियों के लिए खुशी का क्षण है क्योंकि उनका प्रिय जोड़ा वापस लौट आया है। यह श्रीमद् रामायण का एक महत्वपूर्ण सीक्वेंस है।

भारतीय स्टार्टअप्स ने 16 डील्स में 265 मिलियन डॉलर की फंडिंग जुटाई

एजेंसी

नई दिल्ली। इस हफ्ते भारतीय स्टार्टअप्स ने 16 डील्स के माध्यम से 265 मिलियन डॉलर से अधिक की फंडिंग हासिल की है, जिससे स्टार्टअप इकोसिस्टम में फंडिंग की गति बरकरार है। इस हफ्ते की सबसे बड़ी फंडिंग ओम्निचैनल ज्वेलरी स्टार्टअप ब्लूस्टोन को मिली, जिसने अपने प्री-आईपीओ राउंड में 107.2 मिलियन डॉलर जुटाए। फिनटेक क्षेत्र में आय फाइनेंस ने गोल्डमैन सॉक्स (भारत) से 25 मिलियन डॉलर का ऋण प्राप्त किया, जबकि लेंडिंग स्टार्टअप ऐक्सियो ने अमेजॉन संभव वेंचर फंड से 20 मिलियन डॉलर जुटाए। इस सप्ताह ई-कॉमर्स सेक्टर में सबसे ज्यादा फंडिंग हुई, जिसमें चार डील्स के माध्यम से 148.7 मिलियन डॉलर जुटाए गए। घरेलू जल शुद्धिकरण ब्रांड लिवप्योर ने एमएंडजी इन्वेस्टमेंट्स से 208 करोड़ रुपए और एनक्यूबेट कैपिटल पार्टनर्स से लगभग 25 करोड़ रुपए की फंडिंग हासिल की। अन्य उल्लेखनीय फंडिंग में डी2सी आइसक्रीम ब्रांड हंग्यो ने 25 मिलियन डॉलर, एमएसएमईएस पर केंद्रित फिनटेक स्टार्टअप फ्लेक्सीलोन्स ने 9 मिलियन डॉलर और डी2सी लगेज ब्रांड अपरकेस ने 9 मिलियन डॉलर जुटाए। शुरूआती चरण के 13 स्टार्टअप्स ने 53.46 मिलियन डॉलर की फंडिंग हासिल की।

जन्मदिन की बधाई

तुम जियो हजारों साल
साल के दिन हों पचास हजार

बब्बू बादशाह चेयरमैन हग्स लाइव हॉलिस्टिक नशा मुक्ति केन्द्र बीटा-॥ ग्रेटर नोएडा गौतमबुद्धनगर के जन्मदिन पर चेतना मंच परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं

चेतना मंच परिवार

भारत-सिंगापुर मंत्रिस्तरीय बैठक आज

एजेंसी

नई दिल्ली। वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय ने रविवार को बयान में कहा कि भारत-सिंगापुर मंत्रिस्तरीय गोलमेज (आईएसएमआर) बैठक 26 अगस्त सोमवार को सिंगापुर में होगी, जिसमे निर्मला सीतारमण, पीयूष गोयल, एस जयशंकर समेत चार मंत्री भाग लेंगे। इस पहल का मकसद दोनों देशों के बीच व्यापार और आर्थिक संबंधों को और प्रगाढ़ बनाना है। गोयल सिंगापुर में डीबीएस बैंक, टेमासेक होल्डिंग्स, ओमर्स, केपेल इंफ्रास्ट्रक्चर और ओनर्स फोरम सहित प्रमुख वैश्विक व्यापारिक हस्तियों के साथ बातचीत करेंगे। बयान के अनुसार मंत्री भारत में बढ़ते बाजार अवसरों और मजबूत वृद्धि दर के बीच द्विपक्षीय व्यापार और निवेश को बढ़ावा देने की रणनीतियों पर विचार करेंगे। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल, वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण, विदेश मंत्री एस जयशंकर और रेल, सूचना एवं प्रसारण तथा इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री अश्विनी वैष्णव दूसरी भारत-सिंगापुर मंत्रिस्तरीय गोलमेज बैठक में भाग लेंगे। यात्रा के दौरान मंत्री सिंगापुर के मंत्रियों और नेतृत्व के साथ बातचीत करेंगे। आईएसएमआर भारत-सिंगापुर द्विपक्षीय संबंधों के लिए नया एजेंडा निर्धारित करने के लिए स्थापित एक अनूठी व्यवस्था है। इसकी पहली बैठक सितंबर 2022 में नई दिल्ली में हुई थी। बयान के अनुसार यह दूसरी बैठक दोनों पक्षों को अपनी रणनीतिक साझेदारी के विभिन्न पहलुओं की समीक्षा करने तथा इसे और बढ़ाने तथा व्यापक बनाने के लिए नए रास्ते तलाशने में मदद करेगी। द्विपक्षीय व्यापार के मामले में सिंगापुर 2023-24 में भारत का छठा सबसे बड़ा व्यापार भागीदार रहा। कुल व्यापार 35.61 अरब डॉलर का था, जो आसियान (दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के संघ) के साथ भारत के कुल व्यापार का लगभग 29 प्रतिशत है।भारत का निर्यात 14.41 अरब डॉलर जबकि आयात 21.2 अरब डॉलर था।

पृष्ठ एक के शेष....

नोएडा में डायवर्जन...

एनटीपीसी अंडरपास चौराहा से गिझौड़ चौराहा की ओर और गिझौड़ चौक से एनटीपीसी की ओर सभी प्रकार के वाहनों का आवागमन प्रतिबंधित रहेगा। जिन वाहनों को गिझौड़ चौराहा से अट्टा अंडरपास की ओर आना है। वह वाहन गिझौड़ चौराहा से बाएं मुड़कर होशियारपुर तिराहे से दाहिने मुड़कर सिटी सेंटर/गिझौड चौक से दाहिने मुड़कर समरविला तिराहा होकर गंतव्य स्थान को जा सकते हैं।

जिन वाहनों को कार्यक्रम स्थल की ओर (इस्कॉन मंदिर) आना है। वह एडोब बिल्डिंग के बराबर में बनी पार्किंग में अपने वाहन पार्क कर पैदल मंदिर में प्रवेश करेंगे।

वीवीआईपी पार्किंग में जाने वाले वाहन सेक्टर-33 सेक्टर-34 तिराहा से प्रवेश कर शिल्प हाट पार्किंग में अपने वाहन खडा कर पैदल जा सकेंगे।

जिन वाहनों को सेक्टर-31/25 चौराहा से गिझौड़ चौराहा होते हुए सेक्टर-60, सेक्टर-62, इंदिरापुरम् गाजियाबाद की ओर जाना है। वह वाहन सेक्टर-31/25 चौराहा से मोदी माल चौराहा से एडोब चौक, सेक्टर-22, सेक्टर-23, सेक्टर-54 तिराहा से गिझौड़ चौराहा होते हुए अपने गंतव्य स्थान को जा सकेंगे। एलीवेटेड रोड के ऊपर यातायात निर्बाध रूप से चलता रहेगा।

गिझौड़ चौक से इस्कॉन मंदिर की ओर और सेक्टर-31/25 से गिझौड़ की ओर वाहन का प्रवेश प्रतिबंधित रहेगा। जन्माष्टमी समाप्ति तक वाहनों के आवागमन के लिए बंद रहेगा

सेक्टर-19, सेक्टर-27 डीएम चौक से राय रेजीडेंसी के मध्य एवं डीएम चौक से टेलीफोन एक्सचेंज की ओर वाहनों का आवागमन स्थिति के अनुसार प्रतिबंधित किया जाएगा।

इस बार इस्कॉन मंदिर में पांच लाख भक्तों के दर्शन के लिए पहुंचने का अनुमान है। बीते एक दशक में यहां के श्रीकृष्ण जन्मोत्सव की खास पहचान बन गई है। नोएडा के साथ शहर से सटे गाजियाबाद व दिल्ली के लोग भी यहां दर्शन के लिए पहुंचते हैं। भक्तों की संख्या को देखते हुए मंदिर की पांच किमी की परिधि में बैरिकेडिंग की गई है।

राष्ट्रीय लोक दल के...

विस्तार तथा प्रचार करेंगे एवं अधिक से अधिक युवाओं को राष्ट्रीय लोक दल में जोड़ेंगे।

मालूम हो कि सुनील पांडे एक व्यापारी के साथ-साथ नोएडा के पुराने सामाजिक कार्यकर्ता है वह समय-समय पर विभिन्न सामाजिक संगठनों में न सिर्फ सक्रिय रहते हैं बल्कि समाज के लिए कई प्रेरणादायक कार्य भी करते हैं। उनकी इसी कर्मठता को देखकर राष्ट्रीय लोक दल में यह जिम्मेदारी सौंपी गई है। कार्यक्रम में कार्यकारणी का विस्तार भी किया गया।

इस मौके पर राष्ट्रीय लोकदल नोएडा महानगर की मासिक बैठक सम्पन्न हुई। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में क्षेत्रीय उपाध्यक्ष योगेंद्र लोधी, प्रदेश महासचिव हेमा पाठक, महानगर अध्यक्ष विजेंद्र यादव, महानगर महासचिव सुनील पाण्डेय, विधान सभा अध्यक्ष B.L. अग्रवाल सहित सैकड़ों कार्य करता उपस्थित रहे।

सुपरटेक के फंड...

अग्रवाल से पुलिस मुख्यालय में मिले और सुपरटेक की संबंधित कंपनियों के बड़े पैमाने पर वित्तीय अनियमितताओं के बारे में बताया। खरीदार आयोग रस्तोगी ने बताया कि आइआरपी द्वारा प्रस्तावित समाधान प्रस्ताव में सुपरटेक लिमिटेड के सभी परियोजनाओं में नौ हजार करोड़ रुपये की राशि बेमेल है। इस राशि का कहां उपयोग किया गया और कैसे खर्च हुई आइआरपी की ओर से अपनी रिपोर्ट में इस बात को कही दर्शाया नहीं गया है।

विशेष आयुक्त ने खरीदारों को बताया कि सुपरटेक के खिलाफ 13 एफआइआर हैं। उनमें से आठ मामले संबंधित अदालतों में विचाराधीन हैं। अन्य में विवेचना चल रही है। उन्होंने कहा की खरीदार के प्रतिनिधि अगले सप्ताह तक सभी एफआईआर और सभी अदालती मामलों की संदर्भ संख्या प्राप्त कर सकते हैं।

खरीदार अब ईओडब्ल्यू (आर्थिक अपराध शाखा), ईडी (प्रवर्तन निदेशालय), एनसीएलएटी, सुप्रीम कोर्ट मामलों में हजारों घर खरीदारों का प्रतिनिधित्व करने के लिए रूपरेखा तैयार करेंगे।

नोएडा पोस्टमॉर्टम हाउस...

डीप फ्रीज वाले कक्ष में लेकर पहुंचा और उसके अश्लील हरकत की थी। वहां मौजूद परवेंदर ने उसकी इस हरकत का चुपके से वीडियो बना लिया था। उसे पोस्टमॉर्टम हाउस के बाहर खड़ी होने वाली प्राइवेट एंबुलेंस के चालक भानू ने अपना मोबाइल उपलब्ध कराया था। पुलिस ने शेर सिंह, परवेंदर और भानू को पहले ही गिरफ्तार कर लिया था। अब महिला को भी गिरफ्तार कर लिया गया है।

मुख्य आरोपी शेर सिंह पूर्व में भी कई बार विवादों में आ चुका है। बताया जा रहा है कि महिला का कोई बच्चा नहीं है और वह पूर्व में भी शेर सिंह और उसके साथियों के साथ पोस्टमॉर्टम हाउस समेत अन्य जगहों पर जा चुकी है। वीडियो 6 या 7 अगस्त का है। शेर सिंह की पहले से ही महिला से जान-पहचान थी। मुख्य आरोपी शेर सिंह अमरोहा, भानू प्रताप एटा और परवेंद्र जेवर का रहने वाला है। शरशेर सिंह की सेवा विभाग द्वारा समाप्त कर दी गई है।

नवादा गांव में...

को नियंत्रित करने में मदद की। हालांकि, इस घटना का कारण अभी तक स्पष्ट नहीं हो पाया है। अधिकारी मामले की जांच कर रहे हैं और आग लगने के पीछे के कारणों का पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं। स्थानीय प्रशासन ने आश्वासन दिया है कि वे इस मामले की गहन जांच करेंगे और भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए आवश्यक कदम उठाएंगे।

रूट के अर्धशतक से इंग्लैंड ने जीता पहला टेस्ट

एजेंसी

मैनचेस्टर । अनुभवी बल्लेबाज जो रूट के नाबाद अर्धशतक की सहायता से मेजबान इंग्लैंड ने पहले क्रिकेट टेस्ट मैच में श्रीलंका को पांच विकेट से हरा दिया। इस मैच में जीत के साथ ही मेजबान इंग्लैंड को सीरीज में 1-0 की बढ़त मिल गयी है। इस मैच में जीत के लिए मिले 205 रनों का लक्ष्य मेजबान टीम ने पांच विकेट खोकर हासिल कर लिया। इस मैच में लक्ष्य का पीछा करते हुए मेजबान टीम की शुरूआत अच्छी नहीं रही और उसने 78 रनों के अंदर ही तीन विकेट खो दिये। इसके बाद रुट ने हैनरी ब्रुक के साथ मिलकर पारी को संभाला। रुट ने 62 जबकि हैरी ने 32 रन बनाये और अपनी टीम की जीत में अहम भूमिका निभाई।

इंग्लैंड ने इससे पहले वेस्टइंडीज के खिलाफ तीन टेस्ट मैच की सीरीज के सभी मैच जीते थे। इस मैच में श्रीलंकाई टीम अपनी दूसरी पारी में 326 रन बनाये। कामिंडु मेंडिस ने सबसे अधिक 113 रन बनाए पर उनके आउट होते ही टीम बिखर गयी। श्रीलंकाई टीम के अंतिम चार बल्लेबाज 26 रन ही बना पाये। दिनेश चंडीमल 79 रन बनाकर आउट होने वाले अंतिम बल्लेबाज थे।

रूट सबसे ज्यादा अर्धशतक लगाने वाले बल्लेबाज बने

मैनचेस्टर । इंग्लैंड के बल्लेबाज जो रूट ने श्रीलंका के खिलाफ पहले मैच में अर्धशतकीय पारी खेलने के दौरान ही एक अहम उपलब्धि भी अपने नाम की है। अब रुट इंग्लैंड की ओर से सबसे ज्यादा अर्धशतक लगाने वाले खिलाड़ी बन गए हैं। रूट ने इस मैच में श्रीलंका से मिले 205 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए अपने तकनीकी कौशल का प्रदर्शन करते हुए 128 गेंदों में दो चौकों की सहायता से नाबाद 62 रन बनाए। वहीं उन्होंने पहली पारी में 42 रन बनाए थे। अब रूट के 64 अर्धशतक हो गए हैं ये इंग्लैंड के किसी बल्लेबाज द्वारा बनाये सबसे ज्यादा अर्धशतक हैं। वहीं विश्व क्रिकेट की बात करें तो वह दूसरे नंबर पर हैं। भारत के सचिन तेंदुलकर के नाम सबसे अधिक 68 जबकि वेस्टइंडीज के शिवनारायण चंद्रपॉल के नाम 66 अर्धशतक हैं। रुट ने इसी के साथ ही चौथी पारी में 10 वीं बार पचास से अधिक रन बनाये हैं। इससे पता चलत है कि वह एक शीर्ष स्तर के बल्लेबाज हैं। उनसे ज्यादा बेहतर आंकड़े केवल माइकल आर्थटन , एलिस्टेयर कुक जैसे दिग्गजों के साम ही हैं। आर्थटन और कुक के नाम चौथी पारी में 11-11 अर्धशतक का रिकार्ड है।

साइक्लोथोन 4.0 का जावेद अख्तर और किरण कुमारी बनी चैंपियन

एजेंसी

अररिया । अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच की ओर से राष्ट्रीय खेल दिवस के मौके पर फारबिसगंज में रविवार को लगातार चौथे साल आईसीआईसीआई साइक्लोथोन अर्थात साइकिल रेस का आयोजन किया गया,जिसमे बालक और बालिका प्रतिभागियों के लिए अलग अलग कैटेगरी का आयोजन किया गया। मारवाड़ी युवा मंच के अध्यक्ष गौरव जैन की अध्यक्षता में आयोजित आईसीआईसीआई साइक्लोथोन रेस फारबिसगंज के हवाई अड्डा से शुरू हुई,जो हवाई फील्ड से चालू होकर गोढ़ीयारे चौक, दीनदयाल चौक,पोस्ट ऑफिस चौक, सदर रोड, स्टेशन चौक, पटेल चौक होते हुए आदर्श मध्य विद्यालय ढोलबज्जा में जाकर समाप्त हुआ। आदर्श मध्य विद्यालय ढोलबज्जा पहुंचने के उपरांत मारवाड़ी युवा मंच की ओर पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया,

जिसमें बालक वर्ग में प्रथम स्थान पर जावेद अख्तर, द्वितीय स्थान पर नीतीश कुमार एवं तृतीय स्थान पर अशफाक आलम और बालिका वर्ग में पहले नंबर पर किरण कुमारी, दूसरे नंबर पर निक्की कुमारी एवं तृतीय नंबर पर स्वीटी भगत को मौजूद अतिथियों के हाथों पुरस्कृत किया गया। दोनों कैटेगरी में प्रथम स्थान पर आने वाले प्रतिभागी को साइकिल, सर्टिफिकेट, ट्रॉफी व अन्य से नवाजा गया वहीं द्वितीय स्थान पर आने वाले को ट्रॉली बैग, ट्रॉफी, सर्टिफिकेट एवं तृतीय स्थान पर आने वाले प्रतिभागी को स्मार्ट वॉच, सर्टिफिकेट एवं ट्रॉफी से नवाजा गया।

खास खबर

सचिन ने मुंबई हाफ मैराथन को किया रवाना

मुंबई । महान बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर ने रविवार को यहां हुई मुंबई हाफ मैराथन के प्रतियोगियों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। सचिन ने प्रतियोगिता के स्तर और उसके आगे बढ़ने पर खुशी जताते हुए कहा, यहां का माहौल बहुत ऊजार्वान और उत्साहवर्धक है। इसमें इस बार 20,000 से अधिक प्रतिभागी शामिल थे। पिछले साल की तुलना में इस बार महिला प्रतिभागियों की तादाद में 10 फीसदी की बढ़त आई है। उन्होंने कहा, इस बार दृष्टिबाधित प्रतिभागी भी शामिल हुए। प्रतियोगियों में 1000 से अधिक स्कूली बच्चे भी शामिल हुए। इसे लिए भी एक दौड़ आयोजित की गयी थी। सचिन के हरी झंडी दिखाने से प्रतियोगी बेहद उत्साहित नजर आये। सचिन खेल से संन्यास के बाद से ही सभी प्रकार के खेलों को आगे बढ़ने में योगदान दे रहे हैं। उनके नाम अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में सबसे अधिक रन हैं। उन्होंने 664 अंतरराष्ट्रीय मैचों में 34,357 रन और 100 शतक बनाए हैं।

रिजवान पर भड़के भारतीय अंपायर अनिल चौधरी

रावलपिंडी। भारतीय अंपायर अनिल चौधरी ने पाकिस्तान क्रिकेट टीम के विकेटकीपर बल्लेबाज मोहम्मद रिजवान की आलोचना करते हुए कहा है कि वह हर गेंद पर आउट की अपील करते हुए जोर से चिल्लाता है। अनिल ने कहा कि एशिया कप के दौरान मैंने पाकिस्तान के एक मैच में अंपायरिंग की थी। तभी मैंने देखा कि वह ज्यादा ही अपील करता है। मैंने इस पर ध्यान न देते हुए साथी अंपायर को भी उसके बारे में बता दिया था। वह बेकार की अपील करता रहेगा जिसपर ध्यान देने की जरुरत नहीं है। साथ ही कहा कि उसकी एक जोरदार अपील पर मेरे साथी अंपायर आउट देने ही वाले थे पर फिर उनको मेरी बात का ख्याल आया और वो रुक गए। इस दौरान अंपायर ने कहा कि रिजवान हर गेंद पर कबूतर के जैसे उछलता है। भारतीय अंपायर की इस टिप्पणी पर रिजवान के प्रशंसक जरुरत भड़क सकते हैं।

शाहीन को पापा पर अरशद ने दी बधाई

लाहौर। पाकिस्तान क्रिकेट टीम के मुख्य तेज गेंदबाज शाहीन शाह अफरीदी को पिता बनने पर क्रिकेट जगत के साथ ही अन्य क्षेत्रों से भी बधाई मिल रही है। शाहीन को पेरिस ओलंपिक में स्वर्ण जीतने वाले भाला फेंक खिलाड़ी अरशद नदीम ने भी विशेष तरीके से बधाई दी है। अरशद ने सोशल मीडिया में लिखा, ह्य शाहीन शाह , आपको प्यारे बच्चे के जन्म पर बधाई! और शाहिद अफरीदी को नाना बनने पर हार्दिक बधाई। ऊपर वाला आपके नन्हे-मुन्ने को सेहत और खुशियां दे। इस खूबसूरत नए अध्याय के लिए आपके परिवार के लिए प्रार्थनाएं और शुभकामनाएं। शाहीन ने बेहद कम समय में ही तीनों प्रारुपों में अपनी जगह बनायी है। वह पाकिस्तान टीम के मुख्य गेंदबाज होने के कारण अभी बांग्लादेश के खिलाफ सीरीज खेल रहे थे।

कोच गिलिस्पी पर भड़के पाक कप्तान मसूद

रावलपिंडी । पाकिस्तान क्रिकेट का विवादों से गहरा नाता है। पाक टीम के खिलाड़ी कोच से भी झगड़े में पीछे नहीं रहते। इसका एक नया मामला एकबार फिर सामने आया है। बांग्लादेश के खिलाफ पहले टेस्ट में टीम के मुश्किल हालातों में फंसने पर कप्तान शान मसूद और कोच जेसन गिलिस्पी में बहस भी हुई। इसका कारण है कि इस मैच में पाक ने अपनी पहली पारी 6 विकेट पर 448 रन बनाकर पारी घोषित कर दी थी जिसको लेकर कप्तान अपने कोच से सहमत नहीं थे। इसका कारण है कि श्रीलंकाई टीम ने पलटवार करते हुए 565 रन बना दिये। बांग्लादेश के मुशफिकुर रहीम ने 191 रन बनाकर पाक कप्तान और कोच के टीम को जल्द आउट करने की उम्मीद तोड़ दी। मसूद का कोच जेसन गिलिस्पी से बहस का एक वीडियो भी सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हुआ है। ड्रेसिंग रूम के इस वीडियो से पता चलता है कि कप्तान और कोच के बीच सब कुछ ठीक नहीं है।

तन्वी ने जीता एशियाई अंडर-15 बैडमिंटन खिताब

- फाइनल में वियतनामी खिलाड़ी को सीधे गेम में हराया

एजेंसी

चेंग्दू । भारत की तन्वी पत्री ने एशियाई अंडर-15 बैडमिंटन खिताब जीत लिया है। तन्वी ने चीन के चेंग्दू में खेले गये फाइनल में वियतनाम की थि थू हुयेन गुयेन को सीधे गेम में हराकर लड़कियों का एकल बैडमिंटन खिताब अपने नाम किया। तन्वी ने 34 मिनट तक चले फाइनल मुकाबले में वियतनामी खिलाड़ी को 22-20 21-11 से हराया। तन्वी इस जीत के साथ ही एकल खिताब जीतने वाली तीसरी खिलाड़ी बन गयी हैं। इससे पहले सामिया इमाद फारूकी और तस्नीम मीर ने साल 2017 और 2019 में अंडर-15 लड़कियों का एकल खिताब जीता था। तन्वी ने इस पूरे टूनार्मेंट में अपने शानदार प्रदर्शन से अपने सभी पांचों मुकाबले जीते

फाइनल के पहले गेम में तन्वी एक समय 11-17 से पीछे चल रही थी पर इसके बाद उससे वियतनामी खिलाड़ी की गलती से वापसी करते हुए गेम पर कब्जा किया। तन्वी ने दूसरे गेम में अपनी विरोधी खिलाड़ी को कोई अवसर नहीं दिया और मैच अपने नाम किया। इस प्रकार से भारत ने इस प्रतियोगिता में एक स्वर्ण और एक कांस्य पदक जीत लिया है। कांस्य पदक उसे लड़कों की एकल स्पर्धा में ज्ञान दत्तू ने दिलाया है।

धवन की कमी खलेगी : विराट कोहली

एजेंसी

नई दिल्ली । भारतीय क्रिकेट टीम के अनुभवी बल्लेबाज विराट कोहली ने खेल को अलविदा कहने वाले सलामी बल्लेबाज शिखर धवन की जमकर प्रशंसा की है। विराट ने धवन को भारतीय टीम के सबसे अच्छे सलामी बल्लेबाजों में से एक बताया और कहा कि उनके उत्साह, खेल भावना और विशेष मुस्कान की कमी हमें महसूस होगी।

धवन ने शनिवार को क्रिकेट के सभी प्रारूपों से संन्यास की घोषणा कर दी थी। कोहली ने सोशल मीडिया में लिखा, ह्यधवन पदार्पण पर साहसिक प्रदर्शन से लेकर भारत के सबसे भरोसेमंद सलामी बल्लेबाज बनने तक आपने हमें अनगिनत यादें दी हैं। खेल के प्रति आपके जुनून, आपकी खेल भावना और आपकी विशेष मुस्कान की कमी खलेगी पर आपकी विरासत हमेशा बनी रहेगी। साथ ही कहा कि कई यादें देने के लिए मैं आपका आभारी हूं। साथ ही आपको भविष्य के लिए शुभकामनाएं देता हूं। उन्होंने कहा, ह्यढेर सारी यादें देने, अविस्मरणीय प्रदर्शन करने और हमेशा समर्पित भाव से खेलने के लिए आपका आभार व्यक्त करता हूं। साथ ही आपको आगे के जीवन के लिए शुभकामनाएं देता हूं।

धवन सीमित ओवरों के क्रिकेट में लंबे समय तक शीर्ष क्रम पर अपने अच्छे प्रदर्शन के लिए याद किये जायेंगे। विराट और धवन दोनों ने ही घरेलू क्रिकेट में एकसाथ खेलने के बाद अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में कदम रखा था।

सेंट्रल दिल्ली किंग्स ने डीपीएल लीग में लायंस को हराया

एजेंसी

नई दिल्ली । सेंट्रल दिल्ली किंग्स ने दिल्ली प्रीमियर लीग (डीपीएल)) में वेस्ट दिल्ली लायंस के खिलाफ 10 विकेट से जीत दर्ज की है। गेंदबाजों के अच्छे प्रदर्शन के बाद ध्रुव कौशिक के नाबाद अर्धशतक से सेंट्रल दिल्ली किंग्स को इस मैच में जीत के लिए 124 रनों का छोटा सा लक्ष्य मिला। इसका पीछा करते हुए सलामी बल्लेबाज ध्रुव ने 52 गेंदों में नाबाद 68 रन बना दिये। वहीं लक्ष्य थरेजा ने 37 गेंदों में नाबाद 46 रनों की पारी खेली। इस प्रकार सेंट्रल दिल्ली ने 14.5 ओवर में ही लक्ष्य प्राप्त कर लिया। इससे पहले वेस्ट दिल्ली लायंस ने 20 ओवर में आठ विकेट पर 123 रन बनाए थे। सेंट्रल दिल्ली किंग्स की ओर से प्रिंस चौधरी, सुमित कुमार और योगेश शर्मा ने दो-दो जबकि मनी ग्रेवाल ने एक विकेट लिया

मैच में दिखाई दिया बेन स्टोक्स का हमशक्ल

नई दिल्ली । मैनचेस्टर में चल रहे इंग्लैंड बनाम श्रीलंका के पहले टेस्ट में बेन स्टोक्स के हमशक्ल की खूब चर्चा हो रही है। स्टोक्स चोटिल हैं, इस कारण टेस्ट के दौरान इंग्लैंड क्रिकेट टीम की कप्तानी ओली पोप कर रहे हैं। टेस्ट के तीसरे दिन प्रशंसकों को स्टोक्स का हमशक्ल स्टैंड में दिखाई दिया। उक्त हमशक्ल को देखकर फैंस भी खूब हैरान थे। वहीं, स्टैंड में ही बैठे बेन स्टोक्स द्वारा अपने हमशक्ल को किया इशारा भी दर्शकों का ध्यान खींचने में सफल रहा। स्टोक्स जैसा दिखने वाला यह खिलाड़ी पहली बार पिछले महीने नॉटिंघम में इंग्लैंड और वेस्टइंडीज के बीच दूसरे टेस्ट के दौरान भी सुर्खियों में आया था। इंग्लैंड बनाम श्रीलंका पहले टेस्ट में वह आया, कैमरे की नजर हमशक्ल पर पड़ी।

अवनी अब पेरिस खेलों में भी अपने कारनामें दोहराने को तैयार

एजेंसी

नई दिल्ली। 11 साल की उम्र में कार दुर्घटना के कारण कमर के नीचे का हिस्सा लकवाग्रस्त होने के बाद व्हीलचेयर की मदद से चलने वाली पैरालंपिक स्वर्ण पदक विजेता अवनी लेखरा अपने माता-पिता की शुक्रगुजार हैं जिनकी सलाह पर उन्होंने निशानेबाजी में हाथ आजमाना शुरू कर दिया है। अवनी तीन साल पहले टोक्यो पैरालंपिक में एसएच1 श्रेणी में स्वर्ण पदक जीतने के बाद देश की सबसे ज्यादा सुर्खियां बटोरने वाली पैरा खिलाड़ी बनी थी। उन्होंने टोक्यो पैरालंपिक में दस मीटर एयर राइफल में स्वर्ण और 50 मीटर राइफल थ्री पोजिशन में कांस्य पदक जीता था। पैरालंपिक निशानेबाजी स्पर्धा में देश की पहली स्वर्ण पदक विजेता अवनी अब पेरिस खेलों में अपने कारनामों को दोहराने के लिए तैयार है। अवनी

अपने परिवार के कहने पर खेलों से जुड़ी और निशानेबाजी ने उन्हें दुर्घटना से मिले आघात से उबरने में मदद किया। अवनी ने तीरंदाजी में अपना हाथ आजमाने के बाद 2015 में गर्मियों की छुट्टियों के दौरान जयपुर के केंद्रीय विद्यालय नंबर तीन में निशानेबाजी का अभ्यास शुरू किया और फिर पीछे मुड़कर नहीं देखा। अवनी ने एक साक्षात्कार में कहा कि दुर्घटना से पहले मैं किसी भी खेल में नहीं थी और उसके बाद भी मैं किसी भी खेल से जुड़ने के बारे में बिल्कुल नहीं सोच रही थी। लेकिन मेरे माता-पिता हमेशा सोचते थे कि मुझे पढ़ाई के अलावा कुछ और भी करना चाहिए। दुर्घटना के दो साल बाद मैं अपने स्कूल में वापस गई। उन्होंने कहा कि उनके पास क्षेत्रीय खेल और राष्ट्रीय खेल का विकल्प था, इसलिए मेरे माता-पिता ने भी मुझे किसी खेल से जोड़ने के बारे में सोचा और फिर मैंने 2015 में अपनी गर्मियों की छुट्टियों के दौरान वहां तीरंदाजी और निशानेबाजी में हाथ आजमाया। उन्होंने कहा कि मुझे निशानेबाजी करना ज्यादा पसंद आया क्योंकि यह एक इनडोर गेम है, मैंने सोचा ह्यठीक है, चलो शुरू करें। फिर मैंने प्रतिस्पर्धा करना शुरू कर दिया, इसे पसंद करने लगी उसके बाद चीजें आगे बढ़ती गईं। अवनी ने कहा कि मैं प्रतियोगिता के दौरान चीजों को अभ्यास की तरह ही रखना पसंद करती हूं। अगर किसी मैच में कुछ होता है तो मैं प्रशिक्षण के दौरान इसे आजमाती हूं ताकि जब मैं किसी प्रतियोगिता में जाऊं तो मुझे कुछ नया महसूस ना हो। अवनी ने अपनी सफलता का श्रेय कोच चंद्र शेखर को भी दिया।

युवराज को कोच बना सकती है दिल्ली कैपिटल्स

एजेंसी

मुम्बई । ऑलराउंडर युवराज सिंह इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के अगले सत्र में दिल्ली कैपिटल्स टीम के नये कोच बन सकते हैं। पिछले सत्र में टीम के कोच रिकी पोंटिंग थे पर टीम के खराब प्रदर्शन के बाद उन्होंने कोच पद छोड़ दिया था। इसके बाद पूर्व कप्तान सौरव गांगुली के कोच पद संभालने की उम्मीद जतायी जा रही थी पर अब युवराज का नाम आने लगा है। वहीं पहले कहा जा रहा था कि युवराज गुजरात टाइटंस के कोच बन सकते हैं पर आशीष नेहरा के कोच बनने रहने से ये अटकलें गलत निकलीं। ऐसे में अब कहा जा रहा है कि युवराज दिल्ली को कोचिंग देंगे।

युवराज के पास भले ही कोचिंग का कोई पुराना अनुभव नहीं है पर उन्होंने पिछले कुछ साल में शुभमन गिल, अभिषेक शर्मा जैसे क्रिकेटरों को कोचिंग दी है। ऐसे में दिल्ली उनके लंबे बल्लेबाजी अनुभवों का लाभ उठाना चाहेगी। युवराज ने भारतीय टीम की ओर से 40 टेस्ट, 304 एकदिवसीय और 58 टी20ई खेले हैं। 2007 और 2011 में भारत की टी20 और एकदिवसीय विश्व कप टीम की जीत में उनकी अहम भूमिका रही है।

वहीं दिल्ली कैपिटल्स लगातार पिछले तीन सत्र से प्लेऑफ में नहीं पहुंच पायी है। वहीं अब उसके पास पोंटिंग जैसा कोच भी नहीं है। ऐसे में टीम को बल्लेबाजी टिप्स देने के लिए प्रबंधन युवराज की सेवाएं लेना चाहेगा। वहीं गांगुली अभी भी दिल्ली में क्रिकेट के निदेशक बने रह सकते हैं।

सचिन, धोनी ओर विराट से मिलना चाहती हैं मनु

एजेंसी

चंडीगढ़। भारतीय महिला निशानेबाज मनु भाकर की इच्छा भारतीय टीम के महान क्रिकेटरों सचिन तेंदुलकर, महेन्द्र सिंह धोनी और विराट कोहली से मुलाकात करना है। मनु ने कहा है कि वह सचिन , धोनी और विराट के साथ एक दिन का समय बिताना चाहेगी।

मनु इन तीनों के अलावा जमैका के दिग्गज एथलीट उसेन बोल्ट से भी मिलना चाहती है। मनु ने पेरिस ओलंपिक में दो कांस्य पदक जीते थे। वह एक ओलंपिक में दो पदक जीतने वाली भारत की पहली खिलाड़ी हैं।

मनु ने हाल ही में एक साक्षात्कार में कहा , मैं अपने कुछ पसंदीदा खिलाड़ियों से मिलना चाहूंगी। उसेन बोल्ट उनमें से एक हैं। मैंने उनकी किताब कई बार पढ़ी है और मैं उनके खेल सफर को भी जानती हूं। मैंने उनके कई साक्षात्कार देखे हैं। इसके बाद मैं भारतीय क्रिकेटरों में सचिन , धोनी और विराट से मिलना पसंद करूंगी। इनमें से किसी के साथ भी एक घंटा बिताना मेरे लिए बड़े सम्मान की बात होगी। मनु ने पेरिस ओलंपिक की 10 मीटर एयर पिस्टल व्यक्तिगत स्पर्धा में कांस्य पदक जीता था। इसके बाद उन्होंने सरबजोत सिंह के साथ मिलकर इसी इवेंट की मिश्रित टीम स्पर्धा में तीसरा स्थान हासिल किया था। इसी के साथ मनु एक ही ओलंपिक में दो पदक जीतने वाली भारत की पहली खिलाड़ी बनी थीं।

व्हाइट-बॉल सीरीज के समापन के बाद भारतीय टीम लंबे ब्रेक पर

एजेंसी

नई दिल्ली । श्रीलंका के खिलाफ व्हाइट-बॉल सीरीज के समापन के बाद भारतीय टीम लंबे ब्रेक पर है। श्रीलंका के खिलाफ भारत के आखिरी वनडे मैच और बांग्लादेश के खिलाफ पहले टेस्ट मैच के बीच 42 दिन का अंतर है। थोड़े ब्रेक का आनंद लेने के बाद स्टार भारतीय खिलाड़ी कुछ गंभीर काम पर वापस लौटने का लक्ष्य रखेंगे।

भारतीय क्रिकेट टीम के स्टार खिलाडी केएल राहुल आगामी दुलीप ट्रॉफी और घरेलू टेस्ट सीजन की तैयारी के लिए नेट पर वापस आ गए हैं। क्रिकेटर अपने बल्लेबाजी और गेंदबाजी कौशल को बेहतर बनाने की कोशिश करेंगे ताकि बड़े घरेलू सीजन के लिए बेहतर तरीके से तैयार हो सकें। केएल राहुल का एक वीडियो सोशल मीडिया पर सामने आया है जिसमें उन्हें बल्लेबाजी अभ्यास करते देखा गया। यह संभव है कि राहुल बेंगलुरु में राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी में प्रशिक्षण ले रहे हों। वीडियो में राहुल ने एक लॉफ्टेड स्ट्रेट ड्राइव खेला, जिससे दर्शक उनकी क्लास देखकर दंग रह गए। राहुल ने इस साल बहुत अधिक अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट नहीं खेला है क्योंकि वह पहले टेस्ट मैच के बाद इंग्लैंड सीरीज से बाहर हो गए थे। वह अपनी क्वाड्रिसेप्स टेंडन चोट के लिए विशेषज्ञ से परामर्श लेने के लिए लंदन भी गए, जिसके कारण वह श्रृंखला के बाकी मैच नहीं खेल पाए। वह आईपीएल 2024 में लखनऊ सुपर जायंट्स के लिए लौटे और 14 मैचों में 136.13 के स्ट्राइक-रेट से 4 अर्द्धशतकों के साथ 520 रन बनाने में सफल रहे।

रोहित शर्मा की अगुवाई वाली टीम ने प्रतिष्ठित ट्रॉफी जीतने के लिए टी20 विश्व कप 2024 के लिए भारत की 15 सदस्यीय टीम में राहुल को शामिल नहीं किया। श्रीलंका के खिलाफ तीन मैचों की एकदिवसीय श्रृंखला के दौरान राहुल भारतीय टीम में लौटे। केएल राहुल का फॉर्म उनके घरेलू सत्र में भारत के लिए महत्वपूर्ण होगा। उन्होंने केवल पहले 2 मैच खेले और 31, 0 के स्कोर दर्ज किए और तीसरे वनडे में उनकी जगह ऋषभ पंत को शामिल किया गया। दुलीप ट्रॉफी में राहुल शुभमन गिल की अगुवाई वाली टीम ए का हिस्सा हैं जो 5 सितंबर से बेंगलुरु में अपने पहले मैच में टीम बी का सामना करेगी।

स्पेन में यूईएफए यूरोपा लीग फुटबॉल में जीत के बाद बार्सिलोना के फरमिन लोपेज अपने स्वर्ण पदक दिखाते हुए।

भगवान श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव का दिन बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। कृष्ण जन्मभूमि पर देश विदेश से लाखों श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ती हें और पूरे दिन व्रत रखकर नर-नारी तथा बच्चे रात्रि 12 बजे मन्दिरों में अभिषेक होने पर पंचामृत ग्रहण कर व्रत खोलते हैं। कृष्ण जन्म स्थान के अलावा द्वारकाधीश, बिहारीजी एवं अन्य सभी मन्दिरों में इसका भव्य आयोजन होता हैं, जिनमें भारी भीड़ होती है।

विष्णु के अवतार श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव

जन्माष्टमी

कृष्ण जन्माष्टमी भगवान श्री कृष्ण का जनमोत्सव है। योगेश्वर कृष्ण के भगवद गीता के उपदेश अनादि काल से जनमानस के लिए जीवन दर्शन प्रस्तुत करते रहे हैं। जन्माष्टमी को भारत में हीं नहीं बल्कि विदेशों में बसे भारतीय भी इसे पूरी आस्था व उल्लास से मनाते हैं। श्रीकृष्ण ने अपना अवतार भाद्रपद माह की कृष्ण पक्ष की अष्टमी को मध्यरात्रि को अत्याचारी कंस का विनाश करने के लिए मथुरा में लिया। चूंकि भगवान स्वयं इस दिन पृथ्वी पर अवतरित हुए थे अतः इस दिन को कृष्ण जन्माष्टमी के रूप में मनाते हैं। इसीलिए श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के मौके पर मथुरा नगरी भक्ति के रंगों से सराबोर हो उठती है।

भगवान श्रीकृष्ण ही थे, जिन्होंने अर्जुन को कायरता से वीरता, विषाद से प्रसाद की ओर जाने का दिव्य संदेश श्रीमदभगवदगीता के माध्यम से दिया। कालिया नाग के फन पर नृत्य किया, विदुराणी का साग खाया और गोवर्धन पर्वत को उठाकर गिरिधारी कहलाये। समय पड़ने पर उन्होंने दुर्योधन की जंघा पर भीम से प्रहार करवाया, शिशुपाल की गालियाँ सुनी, पर क्रोध आने पर सुदर्शन चक्र भी उठाया। अर्जुन के सारथी बनकर उन्होंने पाण्डवों को महाभारत के संग्राम में जीत दिलवायी। सोलह कलाओं से पूर्ण वह भगवान श्रीकृष्ण ही थे, जिन्होंने मित्र धर्म के निर्वाह के लिए ग़रीब सुदामा के पोटली के कच्चे चावलों को खाया और बदले में उन्हें राज्य दिया। उन्हीं परमदयालु प्रभु के जन्म उत्सव को जन्माष्टमी के रूप में मनाया जाता है।

विष्णु के अवतार

भगवान श्रीकृष्ण विष्णुजी के आठवें अवतार माने जाते हैं। यह श्रीविष्णु का सोलह कलाओं से पूर्ण भव्यतम अवतार है। श्रीराम तो राजा दशरथ के यहाँ एक राजकुमार के रूप में अवतरित हुए थे, जबकि श्रीकृष्ण का प्राकट्य आततायी कंस के कारागार में हुआ था। श्रीकृष्ण का जन्म भाद्रपद कृष्ण अष्टमी की मध्यरात्रि को रोहिणी नक्षत्र में देवकी व श्रीवसुदेव के पुत्ररूप में हुआ था। कंस ने अपनी मृत्यु के भय से बहिन देवकी और वसुदेव को कारागार में क़ैद किया हुआ था। कृष्ण जन्म के समय घनघोर वर्षा हो रही थी। चारों तरफ़ घना अंधकार छाया हुआ था। श्रीकृष्ण का अवतरण होते ही वसुदेव-देवकी की बेड़ियाँ खुल गई, कारागार के द्वार स्वयं ही खुल गए, पहरेदार गहरी निद्रा में सो गए। वसुदेव किसी तरह श्रीकृष्ण को उफनती यमुना के पार गोकुल में अपने मित्र नन्दगोप के घर ले गए। वहाँ पर नन्द की पत्नी यशोदा को भी एक कन्या उत्पन्न हुई थी। वसुदेव श्रीकृष्ण को यशोदा के पास सुलाकर उस कन्या को ले गए। कंस ने उस कन्या को पटककर मार डालना चाहा। किन्तु वह इस कार्य में असफल ही रहा। श्रीकृष्ण का लालन-पालन यशोदा व नन्द ने किया। बाल्यकाल में ही श्रीकृष्ण ने अपने मामा के द्वारा भेजे गए अनेक राक्षसों को मार डाला और उसके सभी कुप्रयासों को विफल कर दिया। अन्त में श्रीकृष्ण ने आतातायी कंस को ही मार दिया। श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव का नाम ही जन्माष्टमी है। गोकुल में यह त्योहार गोकुलाष्टमी के नाम से मनाया जाता है। श्रावण (अमान्त) कृष्ण पक्ष की अष्टमी को कृष्ण जन्माष्टमी या जन्माष्टमी व्रत एवं उत्सव प्रचलित है, जो भारत में सर्वत्र मनाया जाता है और सभी व्रतों एवं उत्सवों में श्रेष्ठ माना जाता है। कुछ पुराणों में ऐसा आया है कि यह भाद्रपद के कृष्ण पक्ष की अष्टमी को मनाया जाता है। इसकी व्याख्या इस प्रकार है कि पौराणक वचनों में मास पूर्णिमान्त है तथा इन मासों में कृष्ण पक्ष प्रथम पक्ष है। पद्म पुराण, मत्स्य पुराण, अग्नि पुराण में कृष्ण जन्माष्टमी के माहात्म्य का विशिष्ट उल्लेख है।

रात्रि जागरण और पूजन

व्रती को रात्रि भर कृष्ण की प्रशंसा के स्रोतों, पौराणिक कथाओं, गानों एवं नृत्यों में संलग्न रहना चाहिए। दूसरे दिन प्रातः काल के कृत्यों के सम्पादन के उपरान्त, कृष्ण प्रतिमा का पूजन करना चाहिए, ब्राह्मणों को भोजन देना चाहिए, सोना, गौ, वस्त्रों का दान, मुझ पर कृष्ण प्रसन्न हों शब्दों के साथ करना चाहिए।

कृष्ण जन्माष्टमी का गहरा अर्थ!

हमारी प्राचीन कहानियों का सौंदर्य यह है कि वे कभी भी विशेष स्थान या विशेष समय पर नहीं बनाई गई हैं। रामायण या महाभारत प्राचीन काल में घटी घटनाएं मात्र नहीं हैं। ये हमारे जीवन में रोज घटती हैं। इन कहानियों का सार शाश्वत है।

कृष्ण जन्म की कहानी का भी गूढ़ अर्थ है। इस कहानी में देवकी शरीर की प्रतीक हैं और वासुदेव जीवन शक्ति अर्थात प्राण के। जब शरीर प्राण धारण करता है, तो आनंद अर्थात कृष्ण का जन्म होता है। लेकिन अहंकार (कंस) आनंद को खत्म करने का प्रयास करता है। यहाँ देवकी का भाई कंस यह दर्शाता है कि शरीर के साथ-साथ अहंकार का भी अस्तित्व होता है। एक प्रसन्न एवं आनंदचित्त व्यक्ति कभी किसी के लिए समस्याएं नहीं खड़ी करता है, परन्तु दुखी और भावनात्मक रूप से घायल व्यक्ति अक्सर दूसरों को घायल करते हैं, या उनकी राह में अवरोध पैदा करते हैं। जिस व्यक्ति को लगता है कि उसके साथ अन्याय हुआ है, वह अपने अहंकार के कारण दूसरों के साथ भी अन्यायपूर्ण व्यवहार करता है।

अहंकार का सबसे बड़ा शत्रु आनंद है। जहाँ आनंद और प्रेम है वहां अहंकार टिक नहीं सकता, उसे झुकना ही पड़ता है। समाज में एक बहुत ही उच्च स्थान पर विराजमान व्यक्ति को भी अपने छोटे बच्चे के सामने झुकना पड़ जाता है। जब बच्चा बीमार हो, तो कितना भी मजबूत व्यक्ति हो, वह थोडा असहाय महसूस करने ही लगता है। प्रेम, सादगी और आनंद के साथ सामना होने पर अहंकार स्वतः ही आसानी से ओझल होने लगता है । कृष्ण आनंद के प्रतीक हैं, सादगी के सार हैं और प्रेम के स्रोत हैं। कंस के द्वारा देवकी और वासुदेव को कारावास में डालना इस बात का सूचक है कि जब अहंकार बढ जाता है तब शरीर एक जेल की तरह हो जाता है। जब कृष्ण का जन्म हुआ था, जेल के पहरेदार सो गये थे। यहां पहरेदार वह इन्द्रियां है जो अहंकार की रक्षा कर रही हैं क्योंकि जब वह जागता है तो बहिर्मुखी हो जाता है। जब यह इन्द्रियां अंतर्मुखी होती हैं तब हमारे भीतर आंतरिक आनंद का उदय होता है।

कृष्ण का दूसरा नाम माखन चोर - का अर्थ कृष्ण माखनचोर के रूप में भी जाने जाते हैं। दूध पोषण का सार है और दूध का एक परिष्कृत रूप दही है। जब दही का मंथन होता है, तो मक्खन बनता है और ऊपर तैरता है। यह भारी नहीं बल्कि हल्का और पौष्टिक भी होता है। जब हमारी बुद्धि का मंथन होता है, तब यह मक्खन की तरह हो जाती है। तब मन में ज्ञान का उदय होता है, और व्यक्ति अपने स्व में स्थापित हो जाता है। दुनिया में रहकर भी वह अलिप्त रहता है, उसका मन दुनिया की बातों से / व्यवहार से निराश नहीं होता। माखनचोरी कृष्ण प्रेम की महिमा के चित्रण का प्रतीक है। कृष्ण का आकर्षण और कौशल इतना है कि वह सबसे संयमशील व्यक्ति का भी मन चुरा लेते हैं।

कृष्ण के सिर पर मोर पंख का महत्व

एक राजा अपनी पूरी प्रजा के लिए ज़िम्मेदार होता है।वह ताज के रूप में इन जिम्मेदारियों का बोझ अपने सिर पर धारण करता है। लेकिन कृष्ण अपनी सभी जिम्मेदारी बड़ी सहजता से पूरी करते हैं - एक खेल की तरह। जैसे किसी माँ को अपने बच्चों की देखभाल कभी बोझ नहीं लगती। श्रीकृष्ण को भी अपनी जिम्मेदारियां बोझ नहीं लगतीं हैं और वे विविध रंगों भरी इन जिम्मेदारियों को बड़ी सहजता से एक मोरपंख (जो कि अत्यंत हल्का भी होता है) के रूप में अपने मुकुट पर धारण किये हुए हैं। कृष्ण हम सबके भीतर एक आकर्षक और आनंदमय धारा हैं। जब मन में कोई बेचैनी, चिंता या इच्छा न हो तब ही हम गहरा विश्राम पा सकते हैं और गहरे विश्राम में ही कृष्ण का जन्म होता है। यह समाज में खुशी की एक लहर लाने का समय है - यही जन्माष्टमी का संदेश है। गंभीरता के साथ आनंदपूर्ण बनें।

जन्माष्टमी का महत्व

इस शुभ मुहूर्त में करें व्रत और पूजा

पूरे भारत सहित विदेशों में भी हिन्दुओं के प्रसिद्ध त्योहार जन्माष्टमी का बेसब्री से इंतजार किया जा रहा है। हिन्दुओं के लिए जन्माष्टमी के त्योहार का बहुत महत्व है। जन्माष्टमी को भगवान श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव के रूप में मनाया जाता है। श्रीकृष्ण को धरती पर भगवान विष्णु का आठवां अवतार माना गया है। हिन्दू कैलेंकर के अनुसार ऐसा कहा जाता है कि श्रीकृष्ण का जन्म श्रावण मास के आठवें दिन यानि अष्टमी पर मध्यरात्रि में हुआ था। वैसे तो पूरे भारत में ही जन्माष्टमी का बड़ी धूम-धाम से मनाया जाता है लेकिन भगवान श्रीकृष्ण की जन्मभूमि वृन्दावन में इस पर्व की अलग ही रौनक देखने को मिलती है। श्रीकृष्ण के जन्म और दुश्मनों पर विजय प्राप्त करने से लेकर कई अन्य कथाएं हैं जो बेहद ही प्रसिद्ध हैं और जिन्हें आज भी पंसद किया जाता है।

जन्माष्टमी का महत्व

मथुरा में कंस नाम का निर्दयी राजा राज करता था उसकी प्रजा उससे प्रसन्न नहीं थी। कंस की एक छोटी बहन थी जिसका नाम राजकुमारी देवकी था, जिसे वह बहुत प्यार करता था। कंस ने अपनी बहन देवकी की शादी वासुदेव के साथ करा दी, अचानक आकाश से एक भविष्यवाणी हुई कि देवकी का आठवां पुत्र उसकी मृत्यु का कारण होगा। यह सुनने के बाद क्रुर कंस ने अपनी बहन देवकी और वासुदेव को बंदी बना लिया और दोनों कई सालों के लिए कारागार में डाल दिया। इन सालों में कंस ने देवकी द्वारा जन्म दी गई 6 संतानों का वध कर दिया। हालांकि कंस को देवकी की सातवीं संतान के बारे में बताया गया कि उसका गर्भपात हो गया लेकिन वे रहस्यमय ढंग से वृंदावन की राजकुमारी रोहिणी के गर्भ में स्थानांतरित कर चुके थे, जो बड़े होकर भगवान कृष्ण के भाई बलराम बने। वहीं श्रीकृष्ण के जन्म के वक्त भगवान निर्देशानुसार वासुदेव कृष्ण को नंद और यशोदा के पास वृंदावन ले गए थे। उस दिन बहुत भयानक तूफान और बारिश थी वासुदेव ने श्रीकृष्ण को एक टोकरी में अपने सिर पर रखकर नदी पार की इस दौरान शेषनाग ने श्रीकृष्ण की बारिश से रक्षा की। वासुदेव ने कृष्ण को नंद को सौंप दिया और वहां से एक बच्ची के साथ लौट आए जिसका जन्म भी उसी दिन हुआ था। इसके बाद जब कंस ने इस बच्ची को मारने की कोशिश की तो यह बच्ची देवी स्वरूप हवा में उड़ गई और फिर से कंस को उसकी मृत्यु को लेकर चेतावनी सुनाई दी। कुछ सालों बाद भगवान श्रीकृष्ण ने कंस का वध कर मथुरावासियों को उसके शासने से मुक्ति दिलाई।

जन्माष्टमी व्रत, भोग और पूजा विधि

इस दिन भगवान श्रीकृष्ण के भक्त पूरी विधि-विधान के साथ उपवास करते हैं। ये जन्माष्टमी से एक दिन पहले सिर्फ एक बार ही भोजन करते हैं। व्रत वाले दिन सभी भक्त पूरे दिन का उपवास करने का संकल्प लेते हैं और अगले दिन अष्टमी तिथि खत्म होने के बाद अपना व्रत तोड़ते हैं। जन्माष्टमी के दिन भगवान श्रीकृष्ण का दूध, जल और घी से अभिषेक किया जाता है। भगवान को भोग चढ़ाया जाता है। व्रत वाले दिन भक्त अन्न का सेवन नहीं करते इसकी जगह फल और पानी लेते हैं जिसे फलाहार कहा जाता है।

भगवान को चढ़ाया जाने वाला छप्पन भोग

जन्माष्टमी के मौके पर मंदिरों में अलग ही रौनक देखने को मिलती है। सूर्यास्त के बाद मंदिरों में भजन-कीर्तन का आयोजन किया जाता है। वहीं जिन लोगों का व्रत होता है वह मध्यरात्रि के बाद अपना उपवास तोड़ते हैं। जन्माष्टमी के अगले दिन को नंद उत्सव के रूप में मनाया जाता है, इस दिन भगवान को 56 तरह के खाद्य पदार्थ चढ़ाएं जाते हैं जिसे छप्पन भोग कहा जाता है। भगवान को भोग लगने के बाद इसे सभी लोगों में बांटा जाता है। ऐसा कहा जाता है कि छप्पन भोग में वही व्यंजन होते हैं जो भगवान श्री कृष्ण को पंसद थे। आमतौर पर इसमें अनाज, फल, ड्राई फ्रूट्स, मिठाई, पेय पदार्थ, नमकीन और अचार जैसी चीजें शामिल होती हैं। इसमें भी भिन्नता होती हैं कई लोग 16 प्रकार की नमकीन, 20 प्रकार की मिठाईयां और 20 प्रकार ड्राई फ्रूट्स चढ़ाते हैं। सामन्य तौर पर छप्पन भोग में माखन मिश्री, खीर और रसगुल्ला, जलेबी, जीरा लड्डू, रबड़ी, मठरी, मालपुआ, मोहनभोग, चटनी, मुरब्बा, साग, दही, चावल, दाल, कढ़ी, घेवर, चिला, पापड़, मूंग दाल का हलवा, पकोड़ा, खिचड़ी, बैंगन की सब्जी, लौकी की सब्जी, पूरी, बादाम का दूध, टिक्की, काजू, बादाम, पिस्ता और इलाइची होते हैं।

जन्माष्टमी के दिन ये उपाय कर बने धनवान

भादौ महीने के कृष्णपक्ष की अष्टमी तिथि की जन्माष्टमी का त्योहार मनाया जाता है. यह त्योहार भगवान श्रीकृष्ण के जन्म उत्सव के रूप में मनाया जाता है. अगर इस दिन भगवान श्रीकृष्ण को प्रसन्न करने के लिए विशेष उपाय किए जाएं तो हर मनोकामना पूरी हो सकती है. धर्म ग्रंथों के अनुसार श्रीकृष्ण की पत्नी रुक्मणी देवी लक्ष्मी का अवतार थीं. तो अगर इस दिन भगवान श्रीकृष्ण को प्रसन्न कर लिया जाए तो मां लक्ष्मी अपने आप ही भक्त पर कृपा बरसा देती है. अगर आप भी माता लक्ष्मी की कृपा पाना चाहते हैं तो जन्माष्टमी के दिन आगे की स्लाइड्स में बताए गए ये अचूक उपाय करें-

- इस दिन भगवान श्रीकृष्ण की पूजा करते समय कुछ रुपए इनके पास रख दें. पूजन के बाद ये रूपए अपने पर्स में रख लें. इससे आपकी जेब कभी खाली नहीं होगी.
- जन्माष्टमी को शाम के समय तुलसी को गाय के घी का दीपक लगाएं और ऊँ वासुदेवाय नमः मंत्र बोलते हुए तुलसी की 11 परिक्रमा करें.
- जन्माष्टमी की करीब12 बजे भगवान श्रीकृष्ण का केसर मिश्रित दूध से अभिषेक करें तो जीवन में कभी धन की कमी नहीं आती, तिजोरी हमेशा पैसों से भरी रहती है.
- भगवान श्रीकृष्ण को पीतांबरधारी भी कहते हैं, जिसका अर्थ है पीले रंग के कपड़े पहनने वाला. इस दिन पीले रंग के कपड़े, पीले फल व पीला अनाज दान करने से मां लक्ष्मी की कृपा प्राप्त होती है.
- किसी कृष्ण मंदिर में जाकर तुलसी की माला से नीचे लिखे मंत्र की 11 माला जप करें. इसके बाद भगवान श्रीकृष्ण को पीला वस्त्र व तुलसी के पत्ते अर्पित करें. मंत्र- क्लीं कृष्णाय वासुदेवाय हरिःपरमात्मने प्रणतःक्लेशनाशाय गोविंदाय नमो नमः
- इस दिन दक्षिणावर्ती शंख में जल भरकर भगवान श्रीकृष्ण का अभिषेक करें. इस उपाय से मां लक्ष्मी की कृपा बरसती है और साधक मालामाल हो जाता है.
- धनवान बनने के लिए जन्माष्टमी के दिन भगवान श्रीकृष्ण को सफेद मिठाई या खीर का भोग लगाएं. इसमें तुलसी के पत्ते अवश्य डालें. इससे भगवान श्रीकृष्ण जल्दी ही प्रसन्न हो जाते हैं.

अभिषेक को खुद नहीं पता था स्त्री 2 के लिए शूट किया था सीन, मुंजा में हो गया इस्तेमाल

अभिषेक बनर्जी की नई फिल्म स्त्री 2 बॉक्स ऑफिस पर सफलता का परचम लहरा रही है और हर दिन ताबड़तोड़ कमाई कर रही है। एक हालिया साक्षात्कार में उन्होंने स्त्री 2 की सफलता पर बात करने के साथ-साथ अपने करियर और अक्षय कुमार के कैमियो को लेकर कई बातें साझा की। अभिषेक बनर्जी इस बात से काफी खुश हैं कि वो स्त्री के रुप में एक बड़ी फ्रेंचाइजी का हिस्सा हैं, जिस पर लोग जमकर प्यार बरसा रहे हैं और थिएटर में हंस रहे हैं, डांस कर रहे हैं और सीटी बजाकर फिल्म का आनंद ले रहे हैं। इंडियन एक्सप्रेस को दिए साक्षात्कार में उन्होंने कहा कि सोचिए आखिरी बार ऐसा कब देखा गया था कि थिएटर के बाहर फिल्म देखने के लिए लंबी-लंबी लाइन लग रही हो। स्त्री 2 को देखने आ रही लोगों की भीड़ को लेकर अभिषेक बनर्जी कहते हैं कि इस पर यकीन नहीं होता है और ये अवास्तविक स्थिति है। उन्होंने अक्षय कुमार की कॉमिक टाइमिंग की तारीफ करते हुए कहा कि गरम मसाला उनकी पसंदीदा फिल्मों में से एक है और जब कभी दुखी होते हैं तो इसे देख लेते हैं। अक्षय के कैमियो पर बात करते हुए अभिषेक ने कहा कि जब निर्देशक अमर कौशिक ने उन्हें इस बारे में बताया था तो वो खुशी से उछल पड़े थे। अभिषेक ने बताया कि उन्हें मालूम था कि वो और अक्षय कुमार अपने इस सीन में सुधार करेंगे और सेट पर मिलने के साथ ही उन्होंने इस बारे में सोचना शुरू कर दिया था। उन्होंने बताया कि जब वो घर लौटे तो दोस्तों को खुशी से बताया कि भाई मैं अक्षय कुमार के साथ फिल्म करके आया हूं। स्त्री 2 का निर्माण दिनेश विजान की प्रोडक्शन कंपनी मैडॉक फिल्म्स द्वारा किया गया है। यह उनके हॉरर कॉमेडी यूनिवर्स का हिस्सा है और खास बात यह है कि अभिषेक बनर्जी ने इस यूनिवर्स की सभी फिल्मों में काम किया है। एक रोचक बात बताते हुए उन्होंने कहा कि मुंजा में उनका जो सीन है, उसे स्त्री 2 के लिए शूट किया था और उन्हें इस बात की कोई खबर नहीं थी कि उसे मुंजा में ले लिया जाएगा।

मैं और तापसी सच के लिए लड़ते हैं

अपनी बेहतरीन फिल्मों के जरिए लोगों के मन में अमिट छाप छोड़ने वाली राइटर-प्रोड्यूसर कनिता ढिल्लों ने बीते सालों में अनगिनत फिल्में की हैं। वो एक बार फिर से अपनी फिल्म फिर आई हसीन दिलरुबा को लेकर खबरों में हैं। रूमी, मुक्कू, रानी जैसी अपनी शर्तों पर जीने वाली आजाद लड़कियों को पर्दे पर गढ़ने वाली राइटर-प्रड्यूसर कनिका ढिल्लों इन दिनों अपनी फिल्म फिर आई हसीन दिलरुबा को लेकर चर्चा में हैं। इसी साल उनके बैनर की पहली फिल्म दो पत्ती भी ओटीटी पर दस्तक देगी।

फिल्म एनिमल में नायक के अपनी पत्नी को धोखा देने की काफी आलोचना हुई। आपकी मनमर्जियां की रूमी और हसीन दिलरुबा की रानी भी अपने पति को धोखा देती हैं। फिर भी उनके प्रति सहानुभूति रहती है। आपको नहीं लगता कि उनकी दगाबाजी भी गलत है

सही और गलत के लिए तो हम यहां आए नहीं है। हम यहां एक इमोशन के लिए बैठे हैं। हम यह देखने के लिए बैठे हैं कि क्या आपने रानी का दर्द, उसका गुस्सा, उसका पश्चाताप महसूस किया हम उसके लिए यहां हैं। हसीन दिलरुबा में आप रानी कश्यप को कभी गलत ठहराते हैं, क्योंकि वह गलत काम करती है। कभी आप उसके दर्द में साथ बहते हैं। कभी अपने मन में उसको डांटते हैं कि ये गलत है। कभी आप उसका पश्चाताप देखते हैं तो उसे प्यार भी करते हैं। मैंने सही-गलत या कोई स्टेटमेंट देने के लिए ये कहानी नहीं लिखी। ये कहानी एक फीलिंग, एक इमोशन के लिए लिखी है।

राइटर्स हर कहानी के साथ एक दुनिया गढ़ते हैं, फिर उसके पूरे होने पर एक खालीपन से गुजरते हैं, आपका राइटिंग प्रॉसेस क्या रहता है रिशू-रानी की दुनिया में वापस जाना कितना सहज या मुश्किल रहा

मैं वो खालीपन होने ही नहीं देती हूं। मैं कहानी से कहानी भागती रहती हूं। कुछ लोग ऐसे लिखते हैं कि हर कहानी में अपना सबकुछ उड़ेल देते हैं। मेरा प्रोसेस उससे बिल्कुल उल्टा है। मैं एक समय में सिर्फ एक कहानी नहीं लिख सकती। मुझे लगता है कि अगर आप कहानी में बहुत ही ज्यादा घुस जाते हैं तो अपका नजरिया कहीं ना कहीं धुंधला जाता है। आप अपने लिखे हुए को निष्पक्ष होकर नहीं देख पाते।

तापसी के साथ आपने मनमर्जियां, रश्मि रॉकेट, हसीन दिलरुबा के दो पार्ट काफी काम कर लिया। उनके साथ अपने रिश्ते को कैसे देखती हैं और वक्त के साथ उसमें क्या बदलाव पाती हैं

हमारा रिश्ता वाकई काफी मजबूत है। हमने काफी फिल्में साथ में कर ली हैं। बदलाव ये है कि हर फिल्म के दौरान मुझे लगता है कि जितना मैं सोचती हूं कि ये लड़की पागल है, वो उससे ज्यादा पागल निकलती है। यही बात मेरे लिए भी लागू होती है। हममें एक चीज कॉमन है कि हम गलत को गलत कहते हैं और सही के लिए लड़ते हैं। हम आवाज उठाने से डरते नहीं है और ये चीज बहुत कम लोगों में पाई जाती है। हम एक दूसरे को समझते हैं, इसलिए हमारा एक राइटर-ऐक्टर का बहुत अच्छा रिश्ता है। हम दोस्त भी हैं और ज्यादातर जिस तरह से मैं लिखती हूं, उसमें जिन ऐक्टर्स से दोस्ती हो जाती है, उनके लिए और मजे से लिख पाती हूं क्योंकि मैं उनकी खूबियां, उनकी कमियां जानती हूं। इसीलिए, मैं ज्यादातर जब अपनी कहानियां लिखती हूं तो कास्ट करके लिखना पसंद करती हूं।

बिजनेस में पहचान बनाने के लिए विक्की ने किया सपोर्ट

बॉलीवुड अभिनेत्री कैटरीना कैफ फिल्मों में अपने अभिनय के लिए तो मशहूर हैं, लेकिन क्या आपको पता है कि वह एक उद्यमी भी हैं दरअसल, अभिनेत्री एक मेकअप ब्रांड की मालकिन हैं। एक साक्षात्कार में उन्होंने खुलासा किया कि अभिनय और उद्यमिता के बीच संतुलन बनाना काफी मुश्किल होता है। उन्होंने अपने पैशन के बारे में बात की और बताया कि वह कैसे अपने काम को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करती हैं। अभिनेत्री कैटरीना कैफ को लगता है कि महिलाओं को अपनी ताकत को समझना जरूरी है। अभिनेत्री के अनुसार केवल मेकअप आत्मविश्वास को बढ़ावा नहीं देता ब्रता दें कि अभिनेत्री उद्यमी फाल्गुनी नायर के साथ ब्यूटी ब्रांड की मालकिन हैं। कैटरीना ने खुलासा किया कि उनके पति, अभिनेता विक्की कौशल कभी-कभी उन्हें अपना फोन डाइनिंग टेबल से दूर रखने के लिए कहते हैं। अभिनेत्री ने कहा, 'एक अभिनेता और एक उद्यमी के रूप में अपने करियर को संतुलित करना अविश्वसनीय रूप से फायदेमंद है, लेकिन साथ ही यह समय भी मांगता है। कई बार मेरे पति (विक्की कौशल) मुझे डिनर टेबल पर फोन रखने के लिए कहते हैं, लेकिन मुझे अक्सर महत्वपूर्ण काम करना होता है। वह समझते हैं कि यह समर्पण अत्यधिक जुनून से आता है।'विक्की कौशल कैटरीना के इस सफर में उनका बड़ा सहारा रहे हैं। वह अक्सर उनकी कड़ी मेहनत की सराहना करते हुए नजर आते हैं। बता दें कि कैटरीना कैफ और विक्की कौशल ने 9 दिसंबर, 2021 को राजस्थान में अपने परिवार और करीबी दोस्तों की मौजूदगी में शादी की थी।

15 सितंबर को नवाजुद्दीन सिद्दीकी की फिल्म 'अद्भुत' का प्रीमियर

बॉलीवुड के मशहूर अभिनेता नवाजुद्दीन सिद्दीकी की आगामी फिल्म 'अद्भुत' का प्रीमियर टेलीविजन पर होने वाला है। 'गैंग्स ऑफ वासेपुर' के अभिनेता ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म इंस्टाग्राम पर एक पोस्ट के जरिए फिल्म की रिलीज की तारीख की घोषणा की। अभिनेता ने फिल्म की एक तस्वीर भी साझा की है। फोटो शेयर करते हुए अभिनेता ने लिखा कि साल की सबसे चौंकाने वाली फिल्म का रहस्य उजागर होते देखें। फिल्म का ट्रेलर शनिवार दोपहर 12 बजे रिलीज किया जाएगा। फिल्म का प्रीमियर 15 सितंबर को सोनी मैक्स चैनल पर रात 8 बजे किया जाएगा। इस फिल्म का निर्देशन सब्बीर खान ने किया है, जिनके साथ नवाज ने पहले मुन्ना माइकल में काम किया था। यह फिल्म एक मिस्ट्री थ्रिलर है। अद्भुत 15 सितंबर को सोनी मैक्स पर रिलीज होने वाली है। इससे पहले, अभिनेता को स्ट्रीमिंग मूवी रौतू का राज में देखा गया था, जिसमें उन्होंने एक पुलिस अधिकारी की भूमिका निभाई थी, जो पोस्ट-ट्रॉमैटिक स्ट्रेस डिसऑर्डर से पीड़ित है। फिल्म को समीक्षकों से तारीफ मिली थी और 28 जून, 2024 को जी5 पर रिलीज किया गया था। नवाज को क्राइम-ड्रामा फिल्म हड्डी में अनुराग कश्यप के साथ स्क्रीन शेयर करते हुए भी देखा गया था। उन्होंने फिल्म में दोहरी भूमिकाएं निभाईं, जिनमें से एक ट्रांसजेंडर का रोल भी था।

पाणी के ट्रेलर लांच के लिए मुम्बई पहुँची प्रियंका चोपड़ा

प्रियंका चोपड़ा की मराठी फिल्म 'पानी' 18 अक्टूबर को बड़े पर्दे पर रिलीज होने वाली है।. ग्लोबल स्टार प्रियंका चोपड़ा अपनी अपकमिंग फिल्म के ट्रेलर लॉन्च में शामिल होने के लिए शुक्रवार की सुबह मुंबई पहुंचीं। इस दौरान वे एयरपोर्ट पर काफी स्टाइलिश अंदाज में नजर आईं। इस दौरान ग्लोबल आइकन प्रियंका चोपड़ा ऑल व्हाइट आउटफिट में फैशन गोल सेट करती हुई नजर आईं। प्रियंका ने व्हाइट क्रॉप टॉप के साथ मैचिंग ट्रैक पैंट, लॉन्ग श्रग, डेनिम कैप और व्हाइट शूज पहने थे। उन्होंने इस दौरान मिनिमल मेकअप किया हुआ था और अपने बालों को ओपन छोड़ा था। इस लुक में प्रियंका काफी हसीन लग रही थीं। प्रियंका की ये तस्वीरें अब सोशल मीडिया पर काफी वायरल हो रही हैं और फैंस एक्ट्रेस के कूल लुक को काफी पसंद कर रहे हैं। बता दें कि कुछ दिन पहले ही प्रियंका ने अपने मराठी प्रोजेक्ट को लेकर एक्साइटमेंट जाहिर करते हुए इंस्टाग्राम पर 'पाणी' का मोशन पोस्टर शेयर किया था। आदिनाथ कोठारे द्वारा निर्देशित, 'पाणी' नांदेड़ के सूखाग्रस्त गांव नागदेरवाड़ी के एक साधारण व्यक्ति की कहानी बताती है। फिल्म उनकी यात्रा को दर्शाती है क्योंकि वह कई चुनौतियों के बावजूद गांव को पानी के मामले में आत्मनिर्भर बनाने की कोशिश करते हैं।

वीडी 14 को लेकर आया नया अपडेट, क्या फिल्म में डबल रोल निभाएंगे विजय देवरकोंडा?

विजय देवरकोंड़ा की आगामी फिल्म वीडी 14 को लेकर एक बड़ी जानकारी सामने आई है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक फिल्म मे वह डबल रोल में नजर आएंगे। फैमिली स्टार के फ्लॉप होने के बाद हाल ही में विजय देवरकोंडा ने कल्कि 2898 एडी में एक विशिष्ट भूमिका निभाई थी। अर्जुन के रूप में उनके अभिनय को लोगों ने खूब पसंद किया था। इस फिल्म के बाद अभिनेता की एक और फिल्म को लेकर काफी चर्चा हो रही है। फिल्म का अस्थाई नाम वीडी 14 है। यह एक पीरियड ड्रामा फिल्म होगी, जिसमें विजय अपनी अदाकारी का जलवा दिखाते नजर आने वाले हैं। हाल ही में इस फिल्म को लेकर एक बड़ा अपडेट सामने आया है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक फिल्म में वह डबल रोल में नजर आएंगे। यह फिल्म अभी प्रोडक्शन के शुरुआती चरण में हैं। रिपोर्ट्स की मानें तो अगले साल की पहली छमाही तक इसकी शूटिंग शुरू होने की उम्मीद है। दावे के मुताबिक फिल्म में विजय पिता और पुत्र के किरदार में दिखेंगे। फिल्म की कहानी को ब्रिटिश काल के इर्द-गिर्द बुना गया है, जिसे फ्लैशबैक दृश्यों के माध्यम से लोगों के सामने रोचक अंदाज में पेश करने की कोशिश की जाएगी। कहा जा रहा है कि फिल्म में पिता का किरदार शक्तिशाली व्यक्ति के रूप में चित्रित किया जा सकता है। हालांकि, फिल्म निर्माताओं ने अभी तक इन रिपोर्ट्स की पुष्टि नहीं की है।इस साल मई में विजय ने अपनी इस फिल्म का एक पोस्टर साझा किया था। इसके लिखा था, महाकाव्य लिखे नहीं जाते, वे नायकों के खून में उकेरे जाते हैं। पोस्टर में सूखी जमीन पर एक योद्धा की प्राचीन मूर्ति दिखाई दी थी, जो अपने घोड़े पर सवार है और तलवार थामे हुए है। फिल्म में कहानी 1854 से 1878 के बीच की दिखाए जाने की उम्मीद है। विजय देवरकोंडा और राहुल सांकृत्यायन ने इससे पहले 2018 की फिल्म टैक्सीवाला में साथ काम किया था, जिसमें प्रियंका जावलकर, मालविका नायर, मधुनंदन, रवि वर्मा, शिजू ने अहम भूमिकाएं निभाई थीं।

जब अल्लू अर्जुन ने प्रभास से की थी ऋतिक की तुलना

साउथ और बॉलीवुड स्टार्स हमेशा से ही प्रशंसकों के बीच काफी प्रसिद्ध रहे हैं। उनसे जुड़ी हर एक खबर पर भी उनके प्रशंसकों की नजर रहती हैं। अब एक अल्लू अर्जुन का थ्रोबैक वीडियो सामने आया है, जिसमें वह ऋतिक रोशन और प्रभास की तुलना करते दिखाई दे रहे हैं। दरअसल, यह वीडियो इस बीच सामने आया है क्योंकि हाल ही में अरशद वारसी ने फिल्म कल्कि 2898 एडी को लेकर प्रभास के बारे में टिप्पणी की थी, जो प्रभास के प्रशंसकों को बिल्कुल भी पसंद नहीं आई। कल्कि 2898 एडी में प्रभास की भूमिका के बारे में अरशद वारसी की टिप्पणियों ने हलचल मचाना जारी रखा है। एक थ्रोबैक वीडियो सामने आया है जिसमें अल्लू अर्जुन अभिनेता ऋतिक रोशन और प्रभास की तुलना आपस में कर रहे हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, जब अल्लू अर्जुन ने ऋतिक और प्रभास की तुलना में कहा कि प्रभास के आगे ऋतिक रोशन कुछ भी नहीं हैं उस दौरान वहां पर निर्देशक एसएस राजामौली के अलावा कई साउथ सिनेमा के दिग्गज मौजूद थे। ऋतिक रोशन को प्रभास से कमतर बताने की अल्लू की क्या वजह रही होगी, यह तो कुछ नहीं कहां जा सकता, लेकिन अल्लू की इन बातों से प्रभास के प्रति उनका प्रेम साफ झलकता नजर आया।

सभी क्षेत्रवासियों को

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी

की हार्दिक शुभकामनाएं

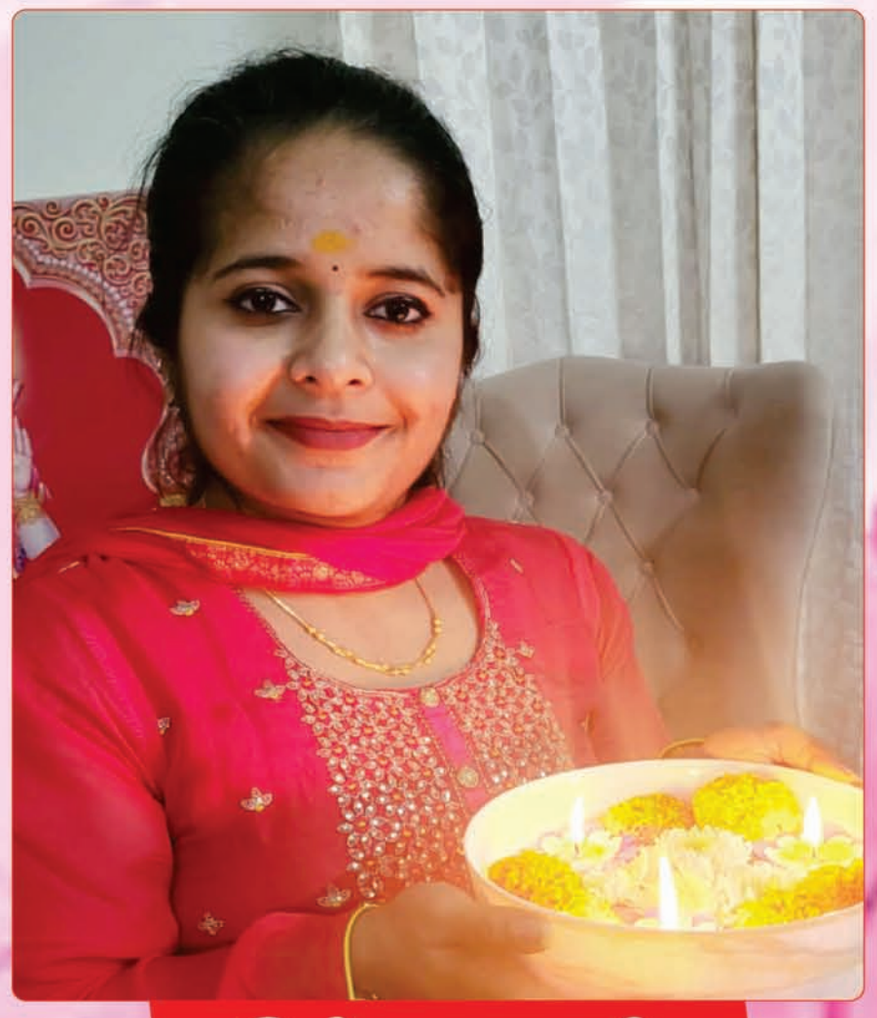

निकेता भाटी

नंदिनी भाटी

एपेक्स इंटरप्राइजेज

डी-35, ओमेक्स इंडिया ट्रेड सेंटर, अल्फा-2, ग्रेटर नोएडा